अप्पन-बीरान

अप्पन-बीरान

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

APPAN-BIRAN (अप्पन-बीरान)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-13-1
दाम: 251/- (भा.रु.)

छठम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2014)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक

ढेरपर बैसल फुलवारी लगौनिहार

संगे नव विहान अननिहारकेँ

अनुक्रम:

हथियाएल खुरपी

भिनसुरका चाह पीला पछाइत काजक हिसाब जोड़ए लगलौं आकि पत्नी आबि कहलैन–

“लफ साग भँसि गेल, अहाँकेँ कोनो धनियेँ नहि?”

अखन धरिक मन सोलहन्नी शुद्ध छल, मुदा काजेक धनि नै अछि तखन भरि दिन करै की छी..?

मनमे कुवाथ भेल। सागक खेती जाइने कऽ भँसेने छेलौं। जानि कऽ ई जे मरदा-मरदी खेत पथारमे काज कऽ कऽ सीख लइए, मुदा स्त्रीगण तँ अँगना-घरमे रहैवाली, जँ कनियोँ उपारजनक लूरि नै हेतैन तखन चुल्हिपर छन-मन केना हएत। सागक खेती आकि लत्ती-फत्तीक बीजमे ओहन शक्ति छै जे माटिक ऊपरो आ तरोमे अँकुरि जाइए। तँए ओतबो लूरि भेने तँ मनमे बिसवास जगबे करतैन किने जे अपन कएल खाइ छी। बरदाश नै भेल। ललैक गेलौं– “बड़ जुतिहारिन छी! जँ आइ नै टमाटरमे कमाएब तँ भँसिये जाएत। तेहेन-तेहेन अमेरकन घास आबि गेल अछि जे अढ़ाइ-दिना बोखार जकाँ ओकरो भऽ गेल छइ।”

जुतिक सबाल तँए रक्का टोकी हेबे करत। से भइये गेल। भोरे-भोर मन लहैर कऽ पीता गेल। बजलौं किछु ने। मुदा हियबऽ लगलौं जे रक्का-टोकीक प्रभाव की भेल। अपने तँ निअमित जे काज अछि से करब मुदा जुइत लगौनिहारि छोड़ि कऽ भगती।

डारि पकैड़ कऽ मुड़ी गोंति तजबीज करए लगलौं। खिसियाएल मने पत्नी चारमे खोंसल खुरपी उतारि बाड़ी दिस डेग

उठौलैन। मन कहलक जे बैसने पछुआ जाएब।

चारमे खुरपी लिअ गेलौं तँ अपन हथियेलहा खुरपी नै छल। की सोचि ओ उतारि नेने छेली से तँ ओ जानैथ मुदा अपना भेल जे भरिसक पुरुखपनाक परिचय दइ दुआरे खुरपी लऽ कऽ चलि गेली। तखन मनमे कनियोँ शंका नै पनपल। दोसर खुरपी रहबे करए, लऽ कऽ चलि गेलौं। कमठौन केलाक पछाइत जखन घरमुहाँ भेलौं आ पाछू उनैट काज देखलौं तँ मन मानि गेल जे काज कम भेल। मुदा कम किए भेल? प्रश्न तँ उठिये गेल।

जेते समय काज करै छी ओते समय तँ आइयो करबे केलौं, आने दिन जकाँ दू बेर पानो खेलौं, तखन एना किए भेल? ने अपन दोख आ ने समैयक तखन दोख केकर? हियबऽ लगलौं तँ खुरपीपर नजैर गेल। अनठिया खुरपी हाथ पड़ि गेल। अनठियो केते रंगक होइए। मुदा नहि, हथबैसू खुरपी आ हथछूटू खुरपीमे जेना होइ छै, से भेल। हथबैसू भेल जे जहिना कोनो मशीनक पाट-पुरजा कल-कल बैसला पछाइत अपन गतिमे अबैए, तखन ने ओकरा बढ़बैक समय सेहो अबैए। जाबे कल-कल नै बैसल रहैए ताबे तँ ओ अपने गतिहीन रहैए। कखनो आगू घुसैक जाइए तँ कखनो पाछू...।

चोर-मोट पकड़ा गेल। मुदा, से एना भेल किए? जानि कऽ केलैन आकि अनजानमे? आनो केता दिन एहेन होइत आबि रहल अछि। सभ रंगक खुरपीक काज अपनो आ हुनको होइते छैन। केना गलती बुझब। किछु फुरबे ने करए, गुन-धुन करैत मन गुन-गुना गेल। राज-दरबारमे अहिना होइ छल। दहिना भागक सियाहीक दुआति बामा भाग करैत, तौल कऽ काज दऽ देल जाइ छल जइसँ अक-वक बन्न रहै...।

मुँह बन्न केने रहलौं।

नहा कऽ खाइले गेलौं तँ आने दिन जकाँ बुझि पड़ल। मुदा मन

तँ सशंकित रहबे करए जे काजमे पछड़ल छी। ताधैर हुनको माने पत्नियोँकेँ मनमे कोनो हलचल नहि, मुदा अपन आन दिनक काजक बरावरीक खुशी भीतरे-भीतर रहबे करैन, तँए सम्मानित भऽ अगुआ कऽ किछु बजऽ नै चाहैथ। बजबो तँ तखन ने उचित हएत जखन दुनू गोरेक काजक नाप-जोख हएत। अखन तँ दुनू गोरेक काज हराएल अछि...। मुदा भूमि ससैर कऽ कर्मभूमि दिस बढ़ि गेल छल। रंगभूमि बनबे करत।

सुर्यास्त भेला पछाइत जखन सौंझुका गायित्री शुरू भेल तँ तरे-तर पत्नीक खुशी बेसी बुझि पड़ल, मुदा जेते हुनका खुशी तेते अपन मन खसल। जेना दूटा नटुआक रंगमञ्चक बीच कियो पटकनिहार तँ कियो पटकाएल एकठाम बैस चाहो-पान करैत आ बम्बैया कलाकारक चरचो करैत। मुदा सेहो नै भऽ पाबि रहल अछि। समझौताक प्रस्ताव रखलौं– “दिनक जे दोख छल ओ भेल आब साँझ पड़ल, पाड़नक समय भऽ गेल, आबो मुँह खोलब की नहि?”

पत्नीक गद-गदाएल मन रहबे करैन, जहिना ढोलकक गदपर हाथ घुसकुनियाँ कटैत सूर मिलबैत तहिना बजली– “दिन दिन छिऐ, राति राइत छिऐ। मुदा आँखिक बीच दुनू अबैत-जाइत जहिना चलैत अछि तहिना ने जिनगियो भेल।”

पत्नीक विचार तँ सुनि लेलौं मुदा मन हरमाज करए लगल। हरमाज ई जे भरि दिनक जे मुँह-फुलौबैल रहल तेकर जड़ि कारण की छल?



तिथि: 11 मार्च 2014, शब्द संख्या: 645

नीक बोल

कौल्हुका साढ़े चारि बजेक ड्यूटी पुइर पढ़ुआ भाय सेवा मुक्तिक आदेश पत्र नेने भोरे गाम पहुँचला। सिताएल नढ़िया जकाँ पत्नी देखि बिनु किछु बजने चाह बनबए गेली। ओना, दूटा पुतोहुओ छैन मुदा ओ दुनू बहरबैये छथिन। जहियासँ भौजी एली तहियेसँ नवकी भौजीक नाओंसँ विभूषित रहली जे अखनो छैथे। भातिजो-पोता सभ भौजीए कहै छैन मुदा तइले एको पाइ रोख-मान नै होइ छैन। ओना, अपनो मन बुढ़ाड़ी नहियेँ मानै छैन तेकर कारण चुल्हि तरक काज रहलैन। जे मन फुरल, जेना मन फुरल तेना बना कऽ खेलौं।

नवके धेलहा कपमे चाहो आ गिलासमे पानियोँ नेने भौजी पढ़ुआ भाइक आगूमे रखि देलकैन।

चाह-पानिक स्वागत देखि भाइक मन खुशी भेलैन। मनमे उठलैन जे पत्नीकेँ कहि दिऐन जे सेवा-निवृत्ति भऽ आबि गेलौं। मुदा लगले भेलैन जे जाबे नै बाजब ताबे भारो तँ नहियेँ बुझती, तइसँ नीक जे चुपे रही। मुदा पति-पत्नीक बीच तँ चुपो-चुपी नहियेँ रहल जा सकैए।

पानि पीब चाहक घोंट लगैबते पढ़ुआ भाय बजला–

“बड़ सुन्नर चाह अछि।”

अपन प्रशंसा सुनि भौजी मने-मन गुर-चाउर फाँकए लगली। मुदा भाइक मन वौआ गेलैन।

जहिना पैंतीस सालक नोकरीक पछाइत पढ़ुआ भाय जगह

बदैल रहल छैथ तहिना काजो बदलतैन। ओना, अखनो मन छुछुआइते रहै छैन जे जखन स्वस्थ छी, काजो नीक करै छी तखन काज छूटब नीक नहि। मुदा सरकारियो निअम तँ निअम छिऐ, नहियोँ तँ नहियेँ मानल जाएत।

हाइ स्कूलसँ मैट्रिक पास केलाक पछाइत पढ़ुआ भाय शहर जे धेलैन से नोकरीसँ निवृत्ति भेले पछाइत छोड़लैन। जहिना नीक विद्यार्थीमे गनल जाइ छला तहिना नीक शिक्षकोमे रहला।

प्रशंसाक लहैर जखन भौजीक थीर भेलैन तखन मुँह खोललैन– "पहिने जे अबै छेलौं तँ साँझू पहरकेँ अबै छेलौं आइ किए भोरे आबि गेलौं।"

भौजीक बात सुनि पढ़ुआ भाइक मन सन्न-दे उड़लैन। मनमे झीक-तीर हुअ लगलैन। हुअ लगलैन जे सोझ मुहेँ कहि दिऐन जे नोकरी समाप्त भऽ गेल आब गामे रहब। फेर लगले भेलैन एते नीक नोकरी करै छेलौं कमा कऽ हाथमे दइ छेलिऐन तँ पत्नियोँ पाहुन जकाँ पुजै छेली। जखने बाजब तखने सुनती। बजैक मन तर-तर करैत रहैन मुदा मुँह बन्ने रखला।

असमंजसमे पतिकेँ पड़ल देखि भौजी तारतम करैत मानिनि जकाँ बजली– "जेतबो समय गाममे बितबै छी तेतबो समय नीक बोल कहियो कहलौं?"

पढ़ुआ भाय– "पुछबो तँ नहियेँ करै छी।"

"अहूँसँ पुछबे करब। आकि केना नीक जकाँ जिनगी चलत तेकर रस्ता परिवारकेँ धड़ाएब?"

"तइमे कमी भेल?"

"जँ से नै भेल तँ अखनो चुल्हि पजारैकाल आँखिसँ नोर किए खसैए?"

“से तँ अहींकेँ ने बुझए पड़त जे सुखल जरनामे मटिया तेल ढारि सलाइ खड़ैर कऽ लगौलासँ आँखिक नोर नै खसै छइ। कनी-मनी चुट-चुटी लगै छइ। तैठाम जे अहाँ काँच जारैनकेँ फूकि कऽ पजारब तँ नोर खसबे करत किने?”

“ई भेल बात गढ़ब।”

“तखन?”

“तखन ई जे नीक बोलक माने ई नै भेल जे बोले रसगर हुअए, बोल जइ काजक घोल करैए ओ काज रसगर होइ।”

पत्नीक बोल सुनि पढ़ुआ भाय थकथका गेला। थकथका ई गेला जे सचमुच परिवार खण्डित भऽ गेल। बहरबैया कमेनिहार तँ रहलौं मुदा घरक नोन-तेलक भाँज कहियो नै बुझि सकलौं, जे कमेला ओ खर्चक भाँज नै बुझलैन आ जे खर्च केलैन ओ उपैतक भाँज नै बुझलैन। पसीना कमाएल जँ फूसि-फासिमे चलि जाएत, तखन परिवार केना ठाढ़ हएत। मुदा जे समय हाथसँ निकैल गेल, पश्चाताप केलाक पछाइत भइये की सकैए। मुदा एहनो तँ भइये सकैए जे दौग कऽ धारमे कुदी। खाएर जे हौउ, परिवार छी दीके-किसीके ठाढ़ तँ ऐछे। जखन जगह बदलत तखन जिनगियो किए ने बदलत...।

पढ़ुआ भाय करेज खोलि बजला– “आब अहींक राजमे आबि गेलौं।”

“मौगी जानि ठकै छी, दसटा पुरुखमे एकटा मौगी मौगी रहत आकि सासुर-मात्रिकक अणे खेलौना..!”



तिथि: 13 मार्च 2014, शब्द संख्या: 565

सुआद

केते दिनक पछाइत कछुआ हाट गेल छेलौं। ओना, गेनेसँ नफे भेल। नफा ई जे मनो ने अछि कहिया कबछुआ सीम खेने छेलौं, से भेट गेल। सेहो कि ओना, भेटल, एकटा तरकारीवालीकेँ समैया सीम हता गेलैन। हाट छुटै छेलैन, वेचारी जखन पोखैर नहाइले गेल रहैथ तखन एकटा गाछपर खूब लतरल-चतरल-पसरल फूल-कोढ़ी आ फड़सँ भरल देखि नेने छेली।

हाटक बेर जखन कोनो गर नै लगलैन तखन पथिया तराजू-बैटखाड़ा नेने पोखैरे महारक रस्तासँ आबि बाटेमे एक पथिया सीम तोड़ि नेने रहैथ। मुदा वेचारीक जहिना मुफ्तक माल रहैन तहिना लेबालो सुखाएले रहैन।

हिया कऽ देखलौं तँ मन मानि गेल जे सीमे छी। अनभुआर जकाँ लगमे पहुँच पुछलयैन– “दादी, ई की छी?”

बेथाएल मन दादीक, पुछिते बखार खोलि देलैन– “बानरक मुँह कहीं नारियल खाए!”

चौंकैत ताल मिलेलौं- “से की! से की दादी?”

दादी नाचए लगली– “बौआ, जिनगी भरिक कमाइ छी सीमवाली। बारहो मास सीमक खेती करै छेलौं। किसिम-किसिमक सीम उबजबै छी आ कछुआ हाट धेने छी। अपन मन कहैए जे दू-पाइ कमाइयो लइ छी आ खेबो करै छी, गुजरो चलैए।”

‘बारहो मास’ सुनि पुछलयैन– “सभ एकसमैया होइए आ अहाँ कहै छी बारहो मास?”

जेना आँखिक देखल चीज आ कानक सुनल दुनूक बीच होइत तहिना बजली– “बौआ, समाज की समाज छी! सीम-भँट्टाक तत् खिधांश केलक जे सीम-भँट्टाक तरकारी भोजसँ उठा देलक। हमर रोजगारे खा लेलक! चालीस रंगसँ ऊपरे किसिमक सीम अपना मिथिलामे अछि। जे बारहो मास पकड़ने अछि।”

मन मानि गेल जे अखनो दादी कमाइले तन-फन करै छैथ। मुदा पोखरिक करहर उखाड़निहार जकाँ पूजी विहीन छैथ। एहेनकेँ की कहल जाए। मुदा भेल विपरीत।

एक ग्रुपमे एक गामक चारि गोरे परदेशी, फगुआमे सभ एबो कएल रहए, संगमे चारिटा बंगलोरक संगी आबि गेल रहै, ओ हिया कऽ हमरो देखलक, बुढ़ियोकेँ देखलक आ सीमक पथियो देखलक। नव इलाका नव चीज जँ नै खेलौं-पीलौं तँ नव जगहपर जाइक अर्थ की भेल- खाली खीर-पुड़ी? एक किलो लेलौं। मुदा ओ सभ पथियो भरि कीनि लेलक। हँसी-खुशीसँ बुढ़ियो विदा भेली, हमहूँ मगन होइत घरमुहाँ भेलौं।

पत्नी वैष्णव। सीमक सुआद मौससँ मिलैत। वैष्णवक कारण भेलै जे बच्चेमे नैहरक गाममे चेचक भेलैन। मौस खा लेलैन। जोर तँ खूब भेली मुदा जान बँचबै दुआरे वैष्णव बनि गेली। हुनका कियो कहि देने जे ऐ सीममे मौसक सुआद होइ छै आ तइसँ पहिने माने बीमारीसँ पहिने कहियो खेने नै रहैथ। तहूमे गरम मसाला सबहक पुड़िया देखि मन भड़ैक गेलैन। तरकारी दिन दिस धकेल देलखिन।

पोखैर दिससँ घुमैतकाल मन गदगदाएले रहए, घरसँ कनी-फरिके रही, आकि मन मानि गेल जे आब गरम मसालाक सुआद भेटत। साँझक टाँहि देलिऐ, मुदा मसालाक गन्ध हेरा गेल। टाँहि दइते आबि दरबज्जाक चौकीपर बैसलौं। नव तीमन अनने छी, तहूमे

मेठनियाँ अछि, कनी देरी हेबे करतै। मुदा से भेल नहि। आने दिन जकाँ बजाहैट भेल।

खाइले गेलौं। थारी देखि मन नाचि उठल, नाचि उठल ई जे सीमक तरकारी नै देखलिऐ। कौल्हुका ठेकान कोन, मनमे घुरिहौठ शुरू भेल। सेहन्तासँ सीम अनने छेलौं जे खाएब, निपत्ता केना भऽ गेल? थारीमे हाथ ठमैक गेल। ठमकल हाथ देखि घरवाली कहली– "रूचिगर नै भेल अछि की?"

मन लोहैछ गेल, कहू जे अरूचिगर कहिया भेल जे हएत। मन कड़ुआ गेल। भेल ई जे एक तँ ओहुना चोरक मुँह चाम सन, तैपर चामेक मुँह छी, की बजा जाएत तेकर ठेकाने कोन। जँ कहीं रूखराह बात आबि जाएत तँ रन्दा चलबए पड़त! फेर भेल, मनुक्ख कि कोनो काठ छी जे रन्दा पड़ने चिक्कन हएत, ओ तँ आरो रूखराहे होइत जाएत, तइसँ नीक जे ओरिया कऽ पुछिऐन, सएह केलौं– "सेहन्ताक सीमकेँ किए सुता देलिऐ?"

पत्नी विह्वल भऽ बजली– "सुतौलिऐ कहाँ, देखिते मोन पड़ि गेल बच्चाक ओ दिन जइ दिन देहमे गोटी भेल आ मौस खा लेलिऐ। मन भटैक गेल जे ओहन सुआद तँ एकरो होइ छइ।"

हाथ ससरल, ढेकार भेल, बजलौं– "ओकरा की करबै?"

"दिन-देखार अहाँले बना देब। अपना नै हएत तँ नूनो-मिरचाइक संग खा लेब। इछाइनक गन्ध मछाइन महैकते छै, तँए सुखल नोन-मिरचाइ कि इछानि-मछानि हएत, अपना रंगमे रहत।"



तिथि: 14 मार्च 2014, शब्द संख्या: 624

गंगा नहेलौं

भोरे सुति उठि दिशा-मैदान दिस बिदा भेलौं, थोड़े आगू बढ़लौं कि सुचीता काकी अँगनेमे बजली–

“गंगा नहेलौं!”

काकीक बात सुनि मन ठमकल, भेल ई जे माघी पूर्णिमा काल्हि छिऐ, सौंझुका गाड़ी पकैड़ लोक सिमरिया-गंगामे डूम दिअ जाएत तखन किए काकी एना बाजि रहल छैथ? धरतीकेँ अकास किए कहि रहल छैथ? कोनो अरथे ने लागए। मनमे खुटका उठि गेल। फेर भेल जे अनेरे फिरिशान होइ छी, जखन काकी सोझहेमे छैथ तखन पुछिये किए ने लेब जे नीक हएत। अनेरे हाथक चुड़ीले ऐनाक कोन काज। किए अपन अनभुआर मनकेँ रगड़ब। रस्तापर ठाढ़ भेलौं। दछिनबरिया घरक अढ़मे काकी रहैथ, हुनकर बात सुनलौं मुदा ने मुँह देखलयैन आने देह, अखनो अढ़ेमे छैथ तखन पुछबैन केना? नै पुछबैन तँ अपन मन थीर नै हएत।

ससैर कऽ आगू बढ़ि काकीक दरबज्जापर पहुँचते खखसलौं। खखैसते काकी बुझि गेली जे भरिसक कियो दरबज्जापर छैथ। ओहो आँगनसँ ससैर दरबज्जापर एली। काकीकेँ देखिते भेल जे कुशल-समाचारसँ गप शुरू करी, मुदा फेर भेल जे अखन गंगा स्नानक समय अछि जँ कहीं अपन स्नानक वृतान्त उठा देलैन आ सुनैत-सुनैत अपने बात बिसैर जाए तखन तँ आरो गजपट हएत। केतए गेलौं तँ केतौ ने! से भऽ जाएत। एकटा युक्ति फुरल। फुरल ई

जे जँ आगू भऽ कऽ काकीए पुछि देलैन जे केम्हर एलौं। तखन अपने सबाल सुढ़िया कऽ पुछि देबैन। मुदा मनक बात ओहो बुझती तखने ने, जँ कहीं दोसरे दिस भँसिया गेली तखन ओतएसँ पकैड़ अनने बिना पुछबो केना करबैन...।

ततमतमे ततमताइते रही आकि सुचीता काकी बजली–

“बौआ, भोरे-भोर देखै छिअ?”

सुचिता काकी सोझमतिया, सोझका सबाल रखि देलैन। पुछलयैन-

“काकी, सिमरिया जाइले लोक सौंझुका गाड़ी ने पकड़त आ अहाँ कहै छिऐ गंगा नहा लेलौं?”

जहिना गीत गौनिहार नव धुन सीखने, वा नव पाँति सीखने बेर-बेर उनटा-पुनटा गबैत तहिना सुचितो काकीक मनमे बेटीक बिआह नचिते रहैन...।

बजली-

“बौआ, आशा छल जे सुनैनाकेँ जोड़ा लगा कन्यादान करब मुदा से भेल, निष्ठासँ पाबि गेलौं।”

काकीक विचारमे गम्भीरताकेँ देखैत पुछलयैन–

“एना झाँपल-तोपल मटियाएल बात हम थोड़े बुझै छी, कनी फरिछा कऽ कहियौ?”

जेना समझदारी पहिने सुननिहारकेँ सुनै-जोकर बना लैत तहिना काकी आग्रह करैत बजली–

“बौआ, भोरुका पहर छिऐ, पहिने चाह पीब लएह, तखन आरो गप-सप्प हेतइ।”

अपनासँ उमेरगर पाबि काकीकेँ कहलयैन– “काकी, अनेरे

कोन लाड़-झाड़मे पड़ै छी, हमहूँ अगुताएले छी।"

ऐगला बात सधलो ने छल आकि बिच्चेमे टोनि देलैन– "बौआ, लोक बुढ़ कहियो ने होइए, तखैन असकताइ कथीक। कोनो कि आइए चाह बनबै छी जे आसकैत लगत, जखन मन होइए तखने बना कऽ पीब लइ छी। तूँ जँ बड़ अगुताएल छह तँ चुल्हिए लग चलह, चाहो बनाएब आ गपो करब।"

सएह भेल। जेना काकीक मन बेसी खुशी तहिना दूधे चाहक अदहन चढ़ौलैन। बिआहक जे उगरलहा चाहपत्ती रहैन, बनेली। नवके कपो रहइ। आगत-भागत देखि मन असथिर भऽ गेल।

अपने फुरने काकी बजली–

"बौआ, नै आशा छल जे सुनैनाक बिआह हएत।"

दोहरबैत प्रश्न सुनि भेल जे किछु एहेन बात जरूर छै जे खुट्टा आगू काकी घुमि तँ रहली अछि मुदा किछु खोलि नै रहली अछि।

पुछलयैन– "कनी फरिछा कऽ बजियौ?"

जेना टहकैत घाक पीज निकलने असि-आस पड़ै छै तहिना काकी बजली–

"बौआ, तीनू बेटीक बिआह सम्पन्न कऽ गंगा नहा लेलौं।"

अपने समस्या अपने काज आ अपने पनचैती जखन कऽ लेलैन तखन बीचमे बाँकीए कथी रहल जे दोसराक जरूरत हएत। मुदा बेथो-कथा तँ किछु छिऐ तँए पुछलयैन–

"से की?"

काकी बजली–

"पहिल बेटीक बिआह सभसँ नीक भेल, जेहने अपन घर-दुआर, बोली-चाली, खेनाइ-पीनाइ, तेहने घरमे बिआह भेल। खरचो

कोनो बेसी नहियेँ भेल।"

पुछरी पकैड़ बिच्चेमे बजलौं– "हँ, से तँ नीके भेल।"

दोसर बेटीक चर्च करैत बजली–

"दोसरोक घर तेहने भेल, खाली साइकिल-घड़ी बेसी भेल। अपनो विचार भेलैन जे स्कूलमे शिक्षक छैथ, तहूमे गामसँ हटि कऽ छैथ तँए जरूरियो छैन।"

सपाट शब्दमे काकी बाजि गेली, मुदा तेसरक चर्च उठबैसँ पहिने ठमैक गेली।

ठमकल देखि पुछलयैन–

"काकी, चुप किए भेलौं?"

विस्मित होइत काकी बजली–

"बौआ, आब बुझै छी जे बुधिमे आगि लगि गेल। पनरह लाख रुपैआ खरच कऽ बेटीकेँ डॉक्टर बनेलौं। समाजक कहबमे मन वौआ गेल जे डॉक्टरकेँ डॉक्टरसँ कम योग्य बर केना हएत। तकैत-तकैत तीन साल जे भेल से केकरा कहबै, देह लगा कऽ मारि लेलौं। मुदा एते कीमती बेटीक मोल यएह होइ जे पच्चीस लाखक बिआहो होइ!"

बजैत-बजैत काकी आँखिसँ नोर ढबढबए लगलैन। नोर पोछैत बजली–

"परसू बिआहक सभ परकिरिया समपन भऽ गेल। सात गंगा नहेलो-फल पाबि गेलौं।



तिथि: 19 मार्च 2014, शब्द संख्या: 690

भँसैत नाह

बेर-बेर ऐ घाटपर नाह-डुम्मीक घटना होइ छै तैयो आन घाटसँ बेसी चलती ऐ घाटक रहिते छइ। बेसी चलतीक कारण ई अछि जे यात्रीक एहेन धारणा बनले छैन जे छह मासक रस्ता नै चली साल भरिक चली। भर्लें कोनो धार किए ने छह-मसुए हुअए।

छह-मसुआ ई भेल जे, जे धार जेठ-अखारमे मोजैर-फुला सौन-भादोमे पूर्ण जुआनी पाबि दुब्बर-दानर सल-सलिआ धारकेँ तेना ने झाँपि दइ छै जे ओ सल-सलिआ धार ऊपरेसँ झँपा जाइत अछि। तेकर कारण ईहो छै जे बादलो बेइमानी करैए, जेना समुद्र ओकरा जल-वायु रूपमे जलधार बनबै छै तेना ओ बेइमानी करै छै जे केतौ फाटि-फाटि बरसै छै तँ केतौ झकसबो नदारथ कऽ दइ छइ। मुदा तैयो अपन दोख कहाँ मानैए। बुर्ड़ाक भऽ छाती खोलि बजैए जे समुचित दिशामे बढ़ए चाहै छी, मुदा हवाक झोंक तेना ने छिड़िया दइए जे राइ-छीती भऽ जाइ छी।

मेघक दमगर विचार सुनि धार पार करब यात्री मानियेँ लइए। ओना, घाटक चलतीक दोसरो कारण छै जे दोसर-तेसर घाट पार करैमे कनी समेओ बेसी लगै छै आ रस्तो कनी बलुआह टपऽ पड़ै छइ। तँए ओइ घाट सबहक कम चलती रहै छइ।

ओना, तीन बेर नाह-डुम्मी भेल, से सभ यात्रीकेँ बुझल छै मुदा पानिमे कि कोनो गाछक घटना होइ छै जे हाड़-पाँजर टुटत, तँए जिनगीक तँ एते गारंटी भइये जाइ छै हाड़-पाँजर तोड़ि काहि काटि

जे मरब तइसँ नीक ने भेल जे पानियोँ पीब आ डुमकी कटैत प्रवाहो भइये जाएब।

ओना, एहेन घटना पहिनौं भेल मुदा औझुका जकाँ नै भेल छल। जेहने वैतरणी पार करैबला माझी तेहने यात्री। कहू जे कनीए हटि चौरगर धारक पेट छइ। चौरगर भेने ऊपर आबि, गहींरसँ समतल भऽ गेने पार करब अधिक बिसवासू होइ छै, से नै चलि साँकर होइत पार करब उकड़ू होइते अछि। नैयाकेँ ने खेबाक चिन्ता होइ छै आ ने मरैया-जीबैयाक। ओ ने कहियो मरत आ ने घाट छोड़त। तँए जँ गीत गाबि नाह नै चलबए तँ मरदानी की आ बिनु मरदानी जिनगानी की। तहूमे जलतरंगसँ लऽ कऽ कठतरंग धरिक साज-सजल रहत आ बौक भेल देहकेँ कठुऔने रहत तँ कठुआइत-कठुआइत तेना कठुआ जाएत जे बुझबे ने करबै जे कठुआएल छी आकि कठगर। मुदा कठगर बेसी गतिगर होइ छइ।

ओही साँकर पेट देने यात्री सभ ओइ पार जेबाक जोर केलक। ओना, नैयाक मन खतरापर जरूर रहै मुदा यात्रीए जुतिसँ चलब अपन कर्तव्य बुझि बेसी जोरो ने केलक। तेतबे नै रहै, मनमे ईहो रहै जे धार पार करब कर्तव्य छी आकि ई घाट-उ घाट करब। अपनाकेँ भीतरे-भीतर नैया अपमानित जकाँ होइत देखलक। से केना मानैत।

बीच धारक पानि ओहने समटा कऽ तेज भऽ गेल छल जेकरा तोड़ि नाह पार करब कठिन बुझि पड़लै। मुदा यात्रीक ढीठपना एहेन जे जल-प्रवाह भऽ जाइ तँ भऽ जाइ मुदा रस्ता नै छोड़ब। बीच धारमे नाहकेँ पहुँचते नैया बाजल–

“यात्री भाय, समधान भऽ जाउ, भऽ सकैए बीचमे कहीं भकमोड़ ने लऽ लिअए। अपन-अपन भार अपना-अपना ऊपर रहल। हमर केकरो ने।”

यात्रीक बीच कटौझ शुरू भेल। किछु आगूसँ बानर जकाँ काटब शुरू केलक तँ किछु पाछूसँ मूस जकाँ कटनियाँ करए लगल। मुदा तही बीच एकटा यात्री जोरसँ बाजल– “जखन नाहमे सवार भेलौं तखन ओइ पार गेने बिना नै छोड़ब।”

ओइ यात्रीक गपक अन्तिम विराम भेबो ने कएल छल आकि अपनेमे कुकुड़-कटौझ शुरू भेल। जोर-जोरसँ एक-दोसरकेँ पकड़बो केलक आ चांगुरक संग दाँतोसँ दकड़ब शुरू केलक। नाह हिलडोल करए लगल। नैया बाजल–

“यात्री भाय, जेकरा जेहेन लूरि-बूधि अछि से तेना बँचब, नै तँ नाहक संग बिच्चेमे डुमि जाएब।”

नैयाक बात सुनि पहिलुके यात्री दोहरबैत बाजल–

“कियो करए आपले माएले ने बापले।”

बजैत धारमे कूदि गेल।

भकमोड़क नाह चकभौर काटए लगल। बामी-दहिनी जलधार पाबि एकोशिया भऽ गेल, बानरक तराजू जकाँ यात्री दोसर दिस झूकि गेल। एकोशिया भार पड़ने नाहो एकोशिया होइत-होइत पनिया गेल। नाहक संग यात्री आ पनियाएल पेट, बिच्चे धारमे डुमि गेल।



तिथि: 26 मार्च 2014, शब्द संख्या: 597

पान पराग

छियासैठ बर्ख पुड़ैत-पुड़ैत डॉक्टर सुनीलक पछुलका सभ नाओं या तँ हेरा गेलैन या तर पड़ि गेलैन। गाम अबिते नाओंए पड़ि गेलैन बुढ़बा डॉक्टर। ओना, जहिना बजरूआ घरक एकटा कोठलीमे पैसने कोठलीए-कोठली सभ घर टहैल लिअ तहिना बुड़हो डॉक्टरकेँ भेलैन। नीक विद्यार्थी आ नीक लगन रहने डॉक्टर सुनीलक पूछ आनसँ भिन्न। जहिना सीनियरो सभ 'सुनील बाउ' कहैन तहिना आन-आन स्टाफ 'सुनील बाबू' कहैन। जइसँ डॉक्टर सुनील भोथिया गेला।

दस बर्खक पछाइत जखन विभागाध्यक्ष भेला तखन 'प्रोफेसर साहैब' भऽ गेला। पहिलुका नाओं हेरा गेलैन। ओना, सोलहन्नी पहिलुका नै हेरेलैन थोड़-थाड़ रहबो केलैन आ थोड़-थाड़ बिसरेबो केलाह। किछुए दिनक पछाइत 'डॉक्टर भैया' आर किछु पछाइत 'डॉक्टर काका' आ सेवा निवृत्तिक पछाइत 'डॉक्टर बाबा' बनि दरभंगासँ गाम आबि गेला।

पुरनका आदैत सेहो शहरसँ गाम नेने एला। जेकर फल छेलैन चारि बजे भोरसँ पहिने अपन नित्य-क्रियासँ निवृत्त भऽ चाह-पीब पढ़ै-लिखैमे लगि जाइ छैथ। ओ वेचारे अपने रहैक घर बनौता तँए मकान बनबैक सभ काज अपने विचारसँ करता जे विचार बेटो दैत खर्चक चिन्तासँ मुक्त कऽ देलकैन। ओना, बेटा मुँह-छोहैने केलकैन, किएक तँ अपनो कमाएल तेते छैन जे आनक खगते ने छैन, मुदा

तैयो बेटाक बोलसँ आरो भरोस बढ़बे केलैन।

पौने छह बजिते बुड़हा डॉक्टरकेँ मनमे उठलैन- आब सबहक उठैक समय भऽ गेल, तहूमे राजमिस्त्रीक संग ने अखन चलब अछि तँए ओकरो सभकेँ उठा दिऐ। टेबुल दिस नजैर उठौलैन। पान परागक अन्तिम पुड़िया पहिने खा गेल छला। बिनु मन बनौने आगू बढ़ब नीक नहि। जगरनाथकेँ सोर पाड़ि कहलखिन– “जगरनाथ, पान-पराग सठि गेल अछि, दोकानसँ नेने आबह।”

पैसा लऽ जगरनाथ विदा हुअ लगल आकि दोहरबैत कहलखिन–

“अखन दोकान खुजल हएत कि नहि?”

जगरनाथ मुँह खोललक–

“चाहवाली तँ अहूसँ पहिने उठि कऽ दोकान खोलि दइ छइ।”

चाहवाली दोकान खोलि दइ छै तइसँ पान-परागकेँ कोन मतलब छइ। पान-पराग तँ पानक दोकानक वौस भेल! दस-पनरह बर्खक बेदरासँ सबालो-जवाब करब नीक नहियेँ हएत, तखन अपन सबालक जवाब केना भेटत। एक तँ ओहिना पराग दुआरे मन थकिआइ छेलैन तैपर अमतीक ओझरीमे ओझराएब नीक नै बुझलैन, युक्ति फुरलैन बजला–

“दोकानमे पान-पराग कीनि, सैति कऽ जीबीमे रखि लीहऽ आ घुमतीकाल मिस्त्री सभकेँ देखने अबिहऽ जे उठल कि नहि।”

एक तँ ओहिना जगरनाथ नोकर, तहूमे जगरनाथेक सोझहामे पिता स्वयं कहा-बधी बुड़हा डॉक्टरसँ करा नेने छला जे काजक बेरमे जगरनाथ काज करत आ खाली समयमे पढ़बए पड़त। ओना, बुड़हा डॉक्टरक अपने मनक बात चन्दन बाजल। मनक बात ई जे शरीरसँ बुढ़ भेने लोकक देह हहैर जाइ छै, तइसँ मनक शक्ति थोड़े

घटै छइ। मुदा जखन परिवारेसँ हटि रहल छी जे कहबो केकरा करबै, तखन तँ यएह ने जे लगमे रहत ओकरेसँ ने गप-सप्प करब...।

गबैयाक लेल जहिना कहबी, वाणी, साखी, झारू, दोहा, चौपाइ, छपाइ इत्यादिमे एके रस भेटै छै तहिना ने आनो-आनकेँ भेटै छइ। तँए चन्दनक करारमे कोनो संशोधन करबे ने केलैन।

दरभंगा रेडियो स्टेशनसँ छ-पाँचक स्वास्थक समाचार प्रसारणमे तमाकुलसँ बनल वस्तुक निन्दा एकटा डॉक्टरक मुहेँ प्रसारित भऽ रहल छेलइ। तीनू राजमिस्त्री नीन तोड़ि पड़ले-पड़ल समाचार सुनि रहल छल। मिस्त्री सभसँ एक लग्गा पाछुए जगरनाथ रहै तखने एकटा मिस्त्री बाजल–

"सभटा झूठ-फूस बजनाहार सभ छी।"

बिच्चेमे दोसर मिस्त्री टपकल–

"भाय, काज तँ सभ करबे करैए कियो मूडसँ करैए कियो भाँज पुरबैए।"

तेसर मिस्त्री सिरमापर मुड़ी उनटबैत बाजल–

"हौ, केकरो सीमा-नाँगैर नै छइ। ने डॉक्टरक कहने हएत आ ने नै हएत, होइ छै अपना किरतबे। जँ ओकरा केने होइतै तँ अपने किए सिगरेट पीब कऽ छातीए जरा लइए?"

डॉक्टरक चर्च सुनि जगरनाथ डेग छोट कऽ लेलक। काजमे हाथ लगैबते डॉक्टर साहैब जगरनाथकेँ कहि देने छेलखिन। कहने ई छेलखिन- 'जखन-के मिस्त्री सभ आराम करैए तखन-के तोहूँ जा कऽ ओकरे सभ लग बैसिहऽ।' तेकर कारण मिस्त्री सबहक नीक-बेजए बुझब छेलैन। सोचो साफ छैन, साफ ई छैन जे जखन आँखिक सोझहामे श्रम करैए तखन जँ मनोनुकूल सुविधा नै भेटै, से

अनुचित भेल। जैठाम घटकिनियाकेँ बढ़किनिया कहै छै तैठाम जँ रामनाम करैत जीब लइ छी सएह बहुत। जगरनाथकेँ देखि मस्त्री बाजल–

“बौआ, तूँ नोकर छहक, जा कऽ डॉक्टर साहैबकेँ कहियौन जे छहटा पान-परागक खर्च अछि, से अपन रोजमे सँ लगैए।”

मिस्त्रीक समाद सुनि जगरनाथ विदा भऽ डॉक्टर साहैब लग पहुँचल। जगरनाथक जेबीमे पान परागक पुड़िया देखि जानमे जान डॉक्टर साहैबकेँ आबि गेल छेलैन। जगरनाथोकेँ बुझल जे मालिक-मलिकानक काज मूड बनला पछाइते होइ छै, तँए पुड़ियाकेँ खोलि मुँहमे झाड़ैक प्रतिक्षा करैत रहए जे कखन दाँतसँ काटि मुँहमे खसौता। सएह केलैन मनमे फुन-फुनी उठिते बुड़हा डॉक्टर बजला– “मिस्त्री सभ उठल कि नहि?”

उठैक जवाब दइसँ पहिने जगरनाथ बाजल–

“बाबा, मिस्त्री सभ उपराग दइए?”

जगरनाथक उपराग सुनि बुड़हा डॉक्टर ठमैक गेला। ठमैक ई गेला जे नान्हिटा बच्चा केते समटल बाजल। दोहरा कऽ पुछब नादानी हएत। कोनो कि मिस्त्री आन छी, काज दुनू गोरे अपना-अपना लूरिये-बूधिये करै छी, मुदा काज तँ सभ घरेक करै छी...।

पान-परागक एगारहो पुड़ियाकेँ समेट बुशटक जेबीमे रखि आगू बढ़ि मिस्त्री लग पहुँचला। मनमे उठलैन सुति कऽ उठैएकाल जँ अलिसा जाएत, तँ भरि दिनक रौद केना डगडगी आबए देतइ। युक्ति फुरलैन महाजनीक टोनमे मिस्त्रीकेँ कहलखिन–

“अहाँ सबहक चाह सेरा कऽ पानि भऽ गेल आ अहाँ सभ ओछाइनो ने छोड़लौं हेन?”

पान-परागक नाओं पहिने दुनू मिस्त्रियो सुनि नेने छल। बुड़हा

डॉक्टरक बात सुनि सुनलाहा मिस्त्री बाजल–

“ऐ कोढ़ियाकेँ देखै छिऐ, एहेन खेबैया अछि तँ रातियेमे ओरिया कऽ किए ने रखि लइए?”

मिस्त्रीक बात सुनि बुड़हा डॉक्टर बजला–

“कथी रखि लइत?”

“अहीले ओछाइन नै छोड़ैए।”

कहि जेबीसँ पान-परागक पुड़ियाक लच्छा आगूमे फेकि देलखिन। मुदा एके गोरे खाइत। हाथमे पुड़ियाक लच्छा पाबि मिस्त्री बाजल–

“डॉक्टर साहैब, भरि दिनमे छहटा पुड़िया खाइ छी।”

“केते दिनसँ खाइ छह?”

आस पाबि मिस्त्री बाजल–

“से कि कोनो दिन-महिनाक लिखा-पढ़ी करै छी, भरि दिनक कमाइसँ भरि दिन जीब लेलौं, तँ ऐसँ बेसीक आशा अनेरे किए करब। पहिने शिखर खाइ छेलौं, रेडियो-अखबार थोड़े पढ़ै छी जे आन ठीनक बात बुझबै, मुदा जइ दिन गामेमे एक गोरे शिखर खाइत-खाइत मरि गेल तइ दिनसँ हमहूँ छोड़ि देलिऐ।”

मिस्त्रीक बात सुनि डॉक्टर साहैबक मन उचटए लगलैन। उचटए ई लगलैन जे अनेरे कोन लपौड़ीमे पड़ए चाहै छी...।

काम-काजी डॉक्टर साहैब जे एको मिनट समय नै छोड़ए चाहैथ। ओना, जखन मिस्त्री लग एला तखन मकानक बात करितैथ, से नै भऽ शिखर-परागमे लगि गेला। तैबीच पाछूसँ जगरनाथो चाह नेने आएल। जहिना जेबीमे बेसी पाइ रहने पाँच-दसकेँ हेराइक महत नै होइ छै तहिना पान-परागक जगह कॉफी देल चाह आबि गेलैन।

घूसक रुपैआ देखि जहिना घूसखोर दस दिन आगूओ काजकेँ निपटाबए चाहैए तहिना शिखर-परागक गपकेँ बिरमित करैत डॉक्टर साहैब बजला–

“देखियौ, जहिना तमाकुलक रंग-रंगक वस्तु बना ओकर शक्तिकेँ कम-बेसी कऽ लोककेँ पोल्हा-पोल्हा खेबाक चहैट लगबैए तहिना तँ चाहो ऐछे, तहूमे जँ कॉफी फेँटि देलिऐ तँ आरो बेसी रंग चढ़ा दइ छइ। तेतबे किए, एकटा संगी छैथ ओ चाहेमे अफीम फेँटि दइ छैथ। खाएर छोड़ू ऐ बातकेँ।”

बुड़हा डॉक्टर साहैबक बात पतराएलो ने छेलैन आकि बिच्चेमे दोसर मिस्त्री कॉफीक चुस्की लैत टोकलकैन– “डॉक्टर साहैब, अखने कनी पहिने तमाकुलक खिधांस रेडियोमे सुनलौं..?”

मिस्त्रीक बात सुनि बगलमे ठाढ़ जगरनाथ बाजल–

“अहाँ तँ रेडियोक समाचार कहै छी, सत् बजैए आकि फूसि तइ पाछू अनेरे किए वौआएब। डॉक्टर बाबा पढ़बैकाल तीन दिन कहलैथ।”

कहि डॉक्टर साहैबपर नजैर देलक। सोझमे पड़ल जहिना कोनो वस्तुक विचार लोक सोचै-विचारैले नै रखि, देखिते निर्णय कऽ लइए, तहिना डॉक्टर साहैब निर्णय करैत बजला– “मिस्त्री दुनू गोरे एके रंग भेलौं, जहिना शरीरसँ हम भेलौं तहिना श्रमसँ अहाँ भेलौं, जीबैक दुनू गोरेकेँ अछि, जँ से नै अछि तँ किए ने रौटीए खसा रहितौं, कोन खगता अछि एहेन मजगूत घर बनबैक।”

डॉक्टर साहैबक विचार सुनि मिस्त्री सकपकाएल। मुदा चाहक लहकी मनमे लहैक गेल रहइ। बाजल–

“बाबा, अहाँक पएर छुबि कहै छी- आइ दिनसँ पान-पराग नै खाएब।”

मिस्त्रीक बात सुनि डॉक्टर साहैबकेँ अपन बड़प्पन नै बुझि पड़लैन, तेकर कारण भेलैन जे विवेकी मन धकियबैत कहलकैन हमर पएर छुबि सप्पत खाएब उचिन नै भेल। ओ छहटा पुड़िया भरि दिनमे खाइए, अपने पनरह-बीसटा खाइ छी। पएर छुबि सप्पत खाएब तँ ओ ने भेल जे अहाँक सीखसँ अपन लीख धड़त। आ जँ से धड़त तखन तँ छहटा पुड़ियाकेँ पनरह-बीसटा बनबए पड़त! मुदा ईहो तँ उचित नहियेँ हएत जे मुँह खोलि कहि दिऐ।

ततमत् करैत बुड़हा डॉक्टर साहैबक मनमे एलैन भक्तो ने ओहने भगवानसँ प्रेम करैए जे अपना अनुकूल होइ, मुदा भक्तक रक्षा करब तँ भगवानक कर्तव्य भेलैन! नीक हएत जे अखनसँ हमहूँ पान-पराग छोड़ि दी, खाइ-पीबैले अधले चीज छै आ नीक चीज नै छइ। तइसँ ईहो हएत जे अपनो औरुदा बढ़त। तहूमे मिस्त्री कि कोनो पैछला सप्पत खेलक आकि ऐगला खेलक...। मन फुरफुरेलैन। बजला–

“बौआ जगरनाथ, जखने जागी तखने परात। अखन धरि जे तोहर निश्छल निर्मल जिनगी रहलह, ओहने हमरो भेटए, तँए तोड़े सप्पत खा, आइसँ पान-पराग छोड़ि देब।”

तेसर मिस्त्री जे अखन धरि अपन मन साधि मुँह बन्न केने छल ओ अपन बजैक समैयक गर पौलक। गर ई पौलक जे पान पराग-शिखरक कटा-कटी भऽ गेल। बाजल–

“बाबा, अहाँ जे एते कमेलिऐ से अहीले तीनमहला छोड़ि एकमहलमे बुढ़ाड़ी बिताएब?”

मिस्त्रीक बात डॉक्टर साहैबकेँ अधला नै लगलैन। तहूमे चाह-कॉफीक रंगसँ मनो चढ़ले रहैन। बजला–

“बौआ, अखन तूँ बच्चा छह तँए जिनगीक तीत-मीठ ओते नै

बुझै छहक। देखहक आब कि हमरा शहर-बजार दिस तकैक अछि, अपन जे गाड़ी छल सेहो पुतोहुएकेँ दऽ देलिऐन। बेटाकेँ ससुरे देने छथिन। कट्ठा भरि घराड़ीक बीच शेष दिन बितबैक अछि। आने-आन देखि कऽ ने लोक अपन जिनगीक ठेकान पबैए। कहाँ किनको देखै छिऐन जे साए बर्ख टपला अछि। तखन तँ भेल पनरह-बीस बर्ख निरोग बनि जीब ली।”

मिस्त्री बाजल–

“तीनियेँटा कोठरीक मकानमे रहब नीक लागत?”

बुड़हा डॉक्टर–

“से ते मनमे हेबे करत, मुदा ओही मनकेँ रेबाड़ि-रेबाड़ि पकैड़ अपन जिनगीक संग ने रगड़बै। तहूमे दुइए परानी भेलौं आ तेसर जगरनाथ भेल। अनेरे कम्पाउण्डर-नर्स इत्यादि रखैक कोन जरूरत अछि। जे रोगी औत ओकरा देखि-सुनि लेबै। तइले बेसी घरक खगते कोन अछि। चारूकात छहरदेबाली जोड़ि घेरि देबै, अपना रहैक, खाइ-पीबैक आ नहाइ-धोइक घर सहिटमे बनल रहत तइसँ किए आसकैत हएत। आसकैत तँ ओइठाम होइ छै जैठाम निच्चाँ-ऊपर सीढ़ी टपए पड़ै छइ।”

मिस्त्री– “जँ कहियो बेटा-पुतोहु औता, तखन ओ सभ केतए रहता?”

“ऊपरमे तँ खालीए रहत किने, अबैएकाल विचारि लेता जे केते समय रहैक अछि तइ हिसाबसँ अपन ओरियान केने औता।”

डॉक्टर साहैबक बात सुनि दोसर मिस्त्री बाजल–

“मन-तन खराप हएत, तखन की करबै?”

मिस्त्रीक बात सुनि बुड़हा डॉक्टर खिल-खिला कऽ हँसैत

बजला– “अपनो ने डॉक्टरो छी। आन रोगीक बात नहियोँ बुझबै किएक तँ बहुत बात बहुत रोगी बजितो ने अछि, मुदा अपन देहक पीड़ाक अनुभव तँ अपने हएत। तइ हिसाबसँ हिफाजत केने तँ काज चलि सकैए। तखन तँ ई देहे काँच-माटिक बनल अछि, एकर केते बिसवास।”

मिस्त्री बाजल– “बाबा, अपने काजकेँ पछुअबै छिऐ जेतेकाल गप-सप्प करबै तेते देरी हएत।”



तिथि: 29 मार्च 2014, शब्द संख्या: 1692

नौमीक हकार

चारि सालक हराएल संगीक फोन नम्बर देखि गुणानन्द रिसिव करैत बाजल–

“के, फलानन्द भाय?”

जवाब भेटल–

“हँ। गामक पहिल चैती नवरात्रा पूजा प्रारम्भ भेल, केना नै ऐबतौं। मुदा अखन पूजाक धुमसाहीमे पड़ल छी तँए आरो गप भेँट भेलापर हएत, अखन एतबे जे काल्हि नौमी छी तँए सवेर-सकाल पहुँच जाइ।”

फलानन्दक फोन सुनि गुणानन्द किछो तर्क-वितर्क नै केलक। अगुरवारे हकार मानि लेलक।

ओना, गुणानन्द आ फलानन्दक दू गाम मुदा दूरी कोसे भरिक। दुनू गामक सीमान मिड्ल स्कूल, जइमे बच्चासँ सतमा किलास संगे-संग पढ़लक। मुदा फलानन्द मिड्ल पास केला पछाइत पिताक संग गौहाटी चलि गेल। जेतए आब कौलेजमे नाओं लिखाएत, मैट्रिक पास कऽ नेने आ गुणानन्द गामेक हाइ स्कूलसँ मैट्रिकक परीक्षा देने।

फोन कटला पछाइत नौमीक हकार दुनूक मनमे हुकड़ए लगल। गुणानन्दक मनमे उठल, अनेरे हकार मानि लेलौं। कहू छुच्छे हाथे जाएब नीक हएत? जेकरा ऐठाम दिन-राति रहि पहुनाइ करब तेकर सोल्हो-अना खाएब उचित हएत? तहूमे दुर्गा अराधनाक

समय! ऐ साल रामपुरमे दुर्गा पूजा शुरू भेल, काल्हि हमरो गाममे भऽ सकैए, तखन जँ हकारक बदला हकार देबै तँ की ओ थोड़े गौहाटीसँ औत, जँ कहीं अपने गामक पूजा जानि एबो करत तँ की अपन छोड़ि हमरा ऐठाम औत?

गुणानन्दक मन थकथका गेलइ। तखन? जँ आगू बढ़ि फलानन्द हाथ बढ़ौलक तँ हमरो उचित होइए जे हाथ बढ़ाबी, काल्हि दिन की हएत ओ काल्हिक भेल, मुदा आइकेँ तँ औझुका बुझि रक्षा करए पड़त। मन मानि विचारि लेलक जे गाइक काल्हि भोरुका जेते दूध हएत ओ लऽ लेब। एके काजसँ दुनू काज भऽ जाएत। कहबैन जे फलानन्द भाय, हमहूँ भगवतीएक अराधना लेल दूध अनने छी से..?

एक तँ गामक मेलाक धुमसाही, तहूमे अष्टमीक निशाँ पूजा दिन। थूको फेकैक फुरसैत फलानन्दकेँ नहि। मुदा काजक दौरमे जे समय भेटै तइमे गुणानन्दक हकार मनकेँ हौंर दइ। हौंर ई दइ जे गामोक लोक दुनियाँमे नाओं उजागर कऽ लइए, तहूमे मिथिला तँ मिथिले छी, जैठाम जनक सन राजा एक हाथ हवनमे दोसर छातीपर रखि शिव-शिव करैथ, तेतै ने हमरो जनम भेल अछि..!

मुदा काजक धुमसाही फलानन्दकेँ असथिरे ने हुअ दइ जे आगू-पाछूक विचार करितए। ओना, विचार करै-जोकर बुधियो ने भेल छेलै कोइली जकाँ अखन कचेठे छेलइ। मुदा मनमे प्रश्न उठैक कारण भेल छेलै जे गौहाटीए स्कूलमे जनक जीक कथा पढ़ि नेने छल। ओना, इतिहास पढ़ब पछुआएल छेलइ। जन, जनक जनकपुरक जानकीक माने नीक जकाँ नै बुझि पाबि सकल अछि।

एक परिवारसँ दोसर परिवारक बीच, तहूमे दोसर गामक, सम्बन्ध सूत्र बनब तँ उचित छी, से बनैक समय आबि गेल, ओना,

मिड्ल स्कूलक संगी फलानन्द जरूर छी मुदा चारि सालक बीच कोनो सम्बन्ध नै रहल, ड्राइवरी लाइसेंस जकाँ सम्बन्धक थोड़े साले-साल रेनुअल करबए पड़ै छै, ऐठाम तँ मासे-मास दिने-दिन सम्बन्ध बनबो करैए आ बिगड़बो करैए...।

सम्बन्धक ओझरीमे गुणानन्द ओझरा गेल। स्पष्ट रस्ता नै देखि बाबा लग पहुँच बाजल–

"बाबा, चारि साल पुरान एकटा संगी ऐठामसँ हकार आएल।"

कहि चुप भऽ गेल। चुप होइत देखि सुखचन्द पुछलखिन–

"हकारक माध्यम की छल?"

गुणानन्द–

"मोबाइल।"

तैबीच सुखचन्दक मनमे विहाड़ि जकाँ झोंक उठि गेलैन, बिनु किछु सोचने कहि देलखिन–

"अखनी तूँ बाल-बोध छह, ने रोकब नीक हएत आ ने नै रोकब, जहिना बाल-बोध तूँ तहिना फलानन्दो अछि। ऐ बातकेँ एतै रहए दहक। मूल बात भेल नौमी पूजाक हकार।"

बाबाक मुहेँ 'नौमी पूजाक हकार' सुनि गुणानन्द खिखिरक बच्चा जकाँ आँखि-कान चौकन करैत, आगूक बात सुनैले तैयार होइत बाजल–

"की कहलिऐ नौमी पूजाक हकार?"

सुखचन्द–

"अपना ऐठाम सालमे चारि बेर दुर्गा-पूजा होइए। तीन-तीन मासपर।"

सालमे चारि बेर पूजा गुणानन्द पहिल दिन सुनने छल तँए

घोदा-घोदे प्रश्न मनमे उठए लगलै। रंग-रंगक मौसम रंग-रंगक विचार। मुदा गुणानन्दक जिज्ञासा सुखचन्द गुणानन्दक चेहराक सुर्खीसँ अंदाजि लेलैन। बजला–

“जाड़क मौसमक अन्त भेला पछाइत ‘चैती दुर्गा’ होइए, तहिना गरमी मौसमक पछाइत, ‘अखाढ़ी’, तहिना बरसाती मौसमक पछाइत ‘शारदीय’ आसीन मासमे होइए मुदा चारिम गजपट अछि। अखन बेसी बात नै कहबह। छुच्छे हाथे नै जइहऽ, किछु सनेस नेने जइहऽ।”

गुणानन्द– “अपनो विचार अछि जे खुटापर गाए अछि भिनसुरका दूध नेने जाएब।”

“बड़बढ़ियाँ।”

बड़बढ़ियाँ सुनिते गुणानन्दक मनमे खुशी भेल। मन कौल्हुका काज दिस बढ़लै। बढ़लै ई जे चारि सालक हराएल संगीसँ भेँट हएत। मनुक्खोक जिनगीक खेल अद्भुत अछि। दुनू गोरेकेँ बेर-बेर, दिनमे पचीसो बेर भेँट भेलो पछाइत सम्बन्धमे मजगूती अबै छै आ सालो-सालक पछाइत भेँट भेलापर जेना बीचला सभ समय सरपट बनि पैछला-ऐगला सपाट बनि गाछक गीरह जकाँ नव कलशक संग कलैश जाइ छै..!

बड़बढ़ियाँ कहला पछाइत सुखचन्दक मन हुमरलैन। मन हुमरलैन ई जे अनेरे दूधक सनेसकेँ ‘बड़बढ़ियाँ’ कहि देलिऐ। चैत मास छी, मौसमक अनुरूप सभ कथुक गुण-धर्म बदलै छइ। जँ से नै बदैलते तँ किए कहियो दूधक प्रसाद तँ कहियो दही-कदवाक प्रसाद बनैए? चारू भगवतीक पूजा रहितो चारू मौसममे चारि रंगक फूल, चारि रंगक फल इत्यादि बदैल जाइए? मुदा कहबो केकरा कहबै। मैट्रिकक बच्चाकेँ जँ सिलेबससँ बाहरक बात कहबै तखन तँ अपन

सिलेबसक बात छुटि जेतै, जँ नहियोँ छूटतै तँ कहैक रस्ता बदैल जेतइ। तखन ओ केना स्कूल-कौलेजक परीक्षा पास कऽ सकैए। वएह ने बुधिक मानदण्ड तैयार करैए। सुरूजक नौमीक पहिल लाली पसैर गेल। फलानन्द अपन औझुका कार्यक्रमक विचार करए पिता लग पहुँच बाजल–

"बाबू, गामक तँ पहिल पूजा छी, आन गामक जँ देखनौं हएब तँ नीक जकाँ नहियेँ देखने हएब, तखन तँ जैठाम रहै छी तैठामक तँ साले-साल देखबो करै छिऐ।"

बेटाक सह पाबि सुशील धमैक बजला– "देखबे किए करै छी। अपन बाड़ीक जे पूजा होइए ओइ समितिक एकटा काजकर्ता छीहे। ऐ बेर कहि कऽ आएल छी जे जाबे छी तैबीचक जे काज अछि तइमे संग रहब, पछाइत गाम चलि जाएब। मुदा..?"

समैयक गतिकेँ देखैत फलानन्द बाजल– "बाबू, अखन एतए-ओतक विचार करैक समय नै अछि। किछुए-कालक पछाइत पाहुन-परक, दोस-महीम, हित-अपेछितक आगमन हुअ लगतैन। तँए पहिने अखैन तइले विचार करू।"

बेटाक काजक ललक देखि सुशीलक छाती चहैक गेलैन। मनमे खुशीक मोती खसलैन। बजला–

"बौआ, एकाधक लेल ने लोक एक-आध ओछाइन-बिछानिक आकि ठहरैक ठौर लगबैए, मुदा गामक पाबैन छी तहूमे उष्ममासी छी, जहिना हवा-विहाड़िक कपाट खुजल रहत तहिना पानि-पाथरक, तँए नीक हेतह जे किछु अगुरवारे बैस बेवस्था कऽ लेब।"

फलानन्द कहलकैन–

"जाइ छी, एकटा समेनाक सभ बेवस्था केने अबै छी।"

"तइले जाइक कोन जरूरत, भड़ो बुझले छह फोन कऽ

दहक, अपने गाड़ीपर सभ किछु नेने पहुँच जेतह।”

काजक ढंग बदलने समैयक बचत सेहो होइते छइ। तत्-खनात आगूमे कोनो काज नै देखि फलानन्द बाजल–

“बाबू, ओना, तँ मेला छी, हवा-विहाड़िक समय छीहे तेतबे किए, गामक मेला छी, सभकेँ कि एके रंग ओकाइत छै जे भगवतीक दर्शन एके रंग करत। तँए किछु नव वस्त्र सेहो भगवतीकेँ चढ़ैबतिऐन।”

सुशील बजला– “भगवतीक तँ खोंइछ भरले जेतैन। मुदा एकटा बात जे कहए चाहै छेलियऽ ओहो सुनि लएह। अपना ऐठाम दस दिनक पूजा-प्रक्रिया अछि जखन कि गौहाटीमे तीन दिनक। ओतए बंगाली पद्धैतक अनुरूप पूजा होइए। से गौहाटीए टामे नहि, पूर्वांचलक बंगाल, बंगला देश, त्रिपुरा, मेघालय, असाम इत्यादि क्षेत्रमे होइए आ अपन मिथिला जे बिहारक पनरह-बीसटा जिला आ नेपालक किछु जिला अछि...।”

बजैकाल तँ सुशील बाजि गेला मुदा बिच्चेमे मन कहलकैन, अखन फलानन्दक उमेरे की भेल जे ई सभ बुझत।

तही बीच समेनाक गाड़ी आबि गेल।



तिथि: 03 अप्रैल 2014, शब्द संख्या: 1119

फोंक मकड़

किशोर आ किसलय मिथिला युनिवर्सिटीक एम.ए.क छात्र। भूगोलक छात्र किशोर आ संस्कृत साहित्यक किसलय। एके कौलेजक दुनू छात्र। छह सालक बीच दुनूमे एहेन सम्बन्ध बनि गेल जे जाति-पाँजि बुझैक खगते ने रहलै। एक कोठरीक बास, एक वर्तनक बनल भोजन, एक सुराहीक पानि सम्बन्धकेँ आरो गतिगर बना देने। जइसँ आन तँ आने जे अपनो दुनूक बीच गाम-घर हेरा जाइ। ओना, दुनूक घर गंगाक दुनू भाग, एक 'मिथिलांचल' दोसर 'मगह' मुदा सम्बन्ध तेहेन बनि गेल जे उत्तर-दच्छिनक बान्ह ढील भऽ गेल। साले-साल दुनू गोरे बेरा-बेरी अपन-अपन इलाकाक दर्शनीय जगह सेहो देखैत आएल, जइसँ देवघरसँ राजगीर आ जनकपुरसँ कोसी-कमला घाट तकक भ्रमण संगे कऽ नेने छल। सैयो छात्रक बीच दुनूक अपन सम्बन्ध बनल छल तँए दोसरकेँ बेसी खोदो-वेद करैक खगता नहियेँ जकाँ रहए। रहबो किए करतै, सभकेँ अपन-अपन जिनगी छै, जिनगीक लीलसा छै आ लीलसाक काज छइ। जँ से नै रहत तँ खाली टोंटाक छुच्छे आवाजसँ कथी हएत...।

छठम बर्खक अन्तिम समय आबि गेल। किछुए दिनक पछाइत एम.ए.क परीक्षा शुरू हएत जे डेढ़ मास धरि चलत। परीक्षाक पछाइत दुनू अपन-अपन जिनगीक मोड़पर सँ मुड़ि घर-परिवार दिस बढ़त...।

दसम दिनसँ परीक्षा। कोठरीमे किशोर आ किसलय बैस

अपन-अपन डायरी उनटबैत रहए। उनटबए ऐ दुआरे लगल रहए जे केकरा ऐठाम किताब अछि वा केकर किताब अनने छिऐ, केकर पैंच-उधार छै सभ फरिया लेब नीक हएत। जाबे धरि ऐठामक दाना-पानी छल, पुड़ेलौं। डायरी उनटबैत किशोरक नजैर चण्देश्वर स्थानक मकड़क मेलापर पड़ल। पड़िते चौंक गेल जे तीन सालसँ नियारैत आएल छी, अखनो पछुआएले अछि। तैबीच केते नव-नव काज आएल-गेल। डायरी उनटा कऽ रखि किशोर बाजल– “पार्टनर, एकटा काज तीन सालसँ पछुआएल अछि, आब तँ सहजे परीछेक समय आगू अछि तँए..?”

तीन साल पछुआएल सुनि किसलयक मनमे खरोंच जकाँ भेल, खरोंच ई जे जखन सोझहामे अबैत काजकेँ निपटबैत गेलौं तखन तीन साल केना पछुआ गेल। मुदा बिना काजक चर्च भेने किछु विचारलो तँ नहियेँ जा सकैए। पुछलक–

“कोन काज?”

किशोर–

“ओना, हमरो नजैरसँ हटिये गेल छल मुदा डायरी उनटैबते धक-दे मोन पड़ल। चण्देश्वर स्थानक मकड़क मेला।”

किशोरक बातकेँ किसलय काट-खोंट करब नीक नै बुझलक जे तीन सालक काज पछुआएल किए। पहिल साल नियारैत-नियारैत बीति गेल, दोसर साल परीक्षे आबि गेल, तेसर साल तेहेन शीतलहरी भेल जे घरसँ निकलब कठिन भऽ गेल।

तीनू बर्खक सुढ़िआएल हिसाब देखि किसलयक मन आइपर पड़ल। परसू पूस बीति रहल अछि पाँचम दिन रबि छी, मकड़क मेला रबियेकेँ होइ छै, तखन किए ने परीक्षासँ पहिने पुराइए ली। किए ओहू वेचाराकेँ मनमे टँगल रहत जे मकड़क मेला नै देखलौं।

बाजल–

“पार्टनर, संयोग नीक अछि दसम दिनसँ परीक्षा छी, तैबीच मकड़ोक मेला शुरू हएत। दुइए दिनक तँ बरदाहट अछि, शनिकेँ दरभंगासँ चलि गाम जाएब आ दोसर दिन जलधार करैत, मेला मनबैत साँझ धरि घुमि कऽ चलि आएब। बेसी दिन पहुनाइ करैक समेओ ने अछि जे बेसी समय गमाएब।”

जइ दिन किशोरो आ किसलयो कौलेजमे नाओं लिखबए आएल, तही दिन नाओं लिखौला पछाइत कौलेजक गेटपर दुनूक भेँट भेल। दुनू अनभुआर, मुदा इलाकाक रहने किसलय कम अनभुआर आ किशोर बेसी। नाओं लिखौला पछाइत डेराक खगता दुनू गोरेकेँ। मुदा अनभुआर जगहमे पुछबो केकरा करत। पुछबोक तँ जगह होइ छइ। एक-दोसरपर नजैर पड़िते, अपन बेथा-कथा कहैक मन दुनूकेँ भेल। मुदा अगुआ कऽ के बाजत। अपन सभ छान-पगहा तोड़ि किशोर बाजल–

“भाय, अहूँ नाओंए लिखबए आएल छेलौं?”

किसलय–

“हँ।”

किशोर–

“अहाँक घर अही इलाका छी?”

किसलय–

“हँ, मधुबनी जिला।”

किशोर–

“अहाँ तँ ऐ जगहक सरोकारी छी, केते लाट-घाट हएत, केतौ हमरो रहैक ओरियान कऽ दितौं?”

किशोरक प्रश्न सुनि किसलय गुम भऽ गेल। मनमे उठलै, केकरो रहैक ठौर, दरबज्जापर आएल पाहुनकेँ एक लोटा पानिक आग्रह, तहूमे बहरबैयाकेँ। गुमकी तोड़ि किसलय बाजल–

"चाहक दोकानपर चलू, चाहो पीब आ आगूक गपो-सप्प हेतइ।"

दोकानक बीचक बाटक बातमे विराम लगि गेल। चुपा-चुप धुपा-धुप दुनू गोरे चाहक दोकानपर पहुँचल। दोकानदारीक बेर उनैह गेल तँए गहिंकीसँ दोकान खाली। दोकानदार अपन बेरुका दोकान चलबैक गर लगबैत रहए। दोकानसँ कि सभ आनए पड़त, खर्चक हिसाब जोड़ि पुरजियो आ रुपैओक हिसाब बैसा लेलक। दोकानमे किशोर आ किसलयक प्रवेश होइते दोकानदार दोकानक भार सुमझबैत बाजल–

"भैयारी, ताबे अहाँ दुनू गोरे बैसू, घन्टा भरिमे दोकानक काज केने अबै छी, तखन चाहो पीआ देब। तैबीच जँ पिआस लगल हुअए तँ बाल्टीनमे पानि अछि पीबू।"

एक तँ बजरूआ दोकान, केकरा ओते पलखैत छै जे दोकानपर बैस गप करत आकि दोकानदारे बैसए देतइ। मुदा से नहि, दोकानदारो एहेन जे अनठियाक हाथमे घन्टा भरिक खातिर दोकाने सुमझा देलक।

किशोर बाजल–

"भाय, हम तँ सभ तरहेँ अनभुआर छी, जेकरो संग कोनो लेन-देनक गप करब, बोलीसँ परेखि अनठिया बुझत। चिन्हार-अनठियामे तँ किछु अन्तर भइये जाइ छइ।"

मुड़ी डोलबैत किसलय बाजल–

"हेबे करै छइ।"

किशोर– “अखन अहूँ विद्यार्थी छी हमहूँ छी, विद्याध्ययन ले एलौं अछि। ओना, असगरोक डेरा होइ छै, मुदा असगरूआ नै बनए चाहै छी, तँए नीक हएत जे दुनू गोरे एकेठाम रहितौं?”

किशोरक विचारकेँ मानितो किसलयोक संग समस्या रहइ। समस्या ई जे किशोर आन इलाकाक अनभुआर आ अपने इलाकाक अनभुआर छी। जखन गामक लोक गामक बातसँ अनभुआर रहैए तखन आन-गाम तँ सहजे आने गाम भेल। तही बीच चाहक दोकानदार आएल। सभ सामानक खल लगबैत दुनूक बीच आबि बाजल–

“घन्टा भरिसँ ऊपरे दोकानक ओगरवाहि दुनू गोरे केलौं अछि, चाह अपना दिससँ पीआएब।”

चाहक आश जेना दुनूक मनमे आस मारलक। पानि पीलौं, चाह पीब, एतेकाल बैसलौं। किसलय बाजल– “भैयारी, दुनू गोरे कौलेजमे नाओं लिखेलौं हेन, बाहर रहै छी, एकटा डेराक भाँज केतौ नै अछि?”

‘डेरा’ सुनि दोकानदार आरो गम्भीर भऽ गेल। बाजल–

“दरभंगामे आएल राही-बटोहीकेँ जँ हम सभ पनाह नै देबै तँ आनठामक देलासँ हेतइ। पहिने चाह पीबू, जहाँ धरि सम्भव हएत, संग पुरब।”

दोकानदारकेँ अपने भाड़ाक दूटा कोठरी, जइमे एकटा खाली। ओना, तीन-चारि गोरेक अँटावेश भऽ सकै छै मुदा दू गोरे अलि-फलिसँ रहि सकैए। चाहक गिलास दोकानदार दुनू गोरेकेँ हाथमे धड़बैत, अपनो चाहक चुस्की लैत बाजल–

“भैयारी, जिनगीक कमाइ एकटा घर अछि, तहूमे बजरूआ घर छी, एक तँ चाहक दोकानदारकेँ घर-बाहर चुल्हिए-चुल्हि रहैए

तँए ओहू घरक काज ओते नहियेँ रहैए।”

किशोर–

“भैयारी! ने चाहक दोकानदार सभ गहिंकीकेँ एकरंग खुश कऽ सकैए आ ने भाड़ादार। प्रश्न अछि केहेन घरक विद्यार्थी रहत। केहेन घर अछि?”

किशोरक बात सुनि दोकानदारकेँ अपन काजक सिनेह बढ़लै। बाजल– “भैयारी, ओना छोट-छोट दोकानदार आ उट्ठा करबारी सभ भाड़ामे घर मंगैए, मुदा अपना मनमे परपन नै होइए। जेहने भाड़ादार रहत तेहने ने धियो-पुतो सीखत।”

किसलय–

“देखू, हम सभ पढ़ैले रहब, किछु दिनक पछाइत चलिये जाएब, तँए डेरा नीक हुअए?”

दोकानदार– “की नीक?”

किसलय–

“एकान्त जगह होइ। एहेन नै होइ जे जैठाम वीणाक तारपर स्वर साधना होइ आ बगलमे लोहाक घन चलैत रहइ।”

अपन एकान्त जगह पाबि दोकानदार बाजल–

“एक तँ ओहिना अपना तीनियेँ गोरेक परिवार अछि। दुनू परानी चाहेक दोकानक जोगाड़मे रहै छी, सात-आठ बर्खक बेटा अछि, चाहै छी जे ओकरा कौलेज तक पढ़ाएब। अपने जे करै छी से करै छी मुदा बेटाकेँ मनुक्ख बना ठाढ़ कऽ दिऐ, बस भऽ गेल अपन जिनगीक खेल।”

किशोर–

“चलू, तखन पहिने डेरे देखि लेब। जँ रहैक गर लगि जाएत तँ

परसुए किए ने चलि आएब।"

टोलक बीच दोकानदारक घर। गोटि पङ्गरा पक्का घर नै तँ केकरो पजेबाक देबालपर एस्वेस्टस आकि खपड़ा तँ केकरो माटिक देबालपर खढ़क छार। तीन कोठरीक संग नहाइ-धोइक सभ बेवस्था केने।

कोठरी पसिन करैत किसलय बाजल– "खाइ-पीबैक बेवस्था?"

दोकानदार बाजल– "जँ अपने गामसँ चाउर-दालि आनि भानस करी सेहो बढ़ियाँ, नै तँ महिनवारी हिसाबसँ बनाइयो दइले कहब सेहो बढ़ियाँ।"

'चाउर-दालि' सुनि किशोर बाजल–

"आब ओ जुग-जमाना रहल जे लोक गामसँ चाउर-दालि बजार आनत। गामेमे किए ने बेचि ऐठाम कीनि लेत। एते दिन एहेन छेलै जे लोक बजरूआ चाउर-दालिकेँ दब आ घरैयाकेँ नीक बुझै छल आब से सभ थोड़े रहल। जाँतक तरका तरोटा जकाँ गाम अखनो कीलमे गराएले अछि, खेबा-पीबाक सामानसँ बजार भरि गेल अछि।"

ओही दोकानदारक घरमे दुनू गोरे (किशोर आ किसलय) छठम् बर्खक उतारमे पहुँच गेल।

शुभ काजमे बिलम नीक नै बुझि दुनू गोरे शनि दिन डेरासँ निकैल गाम विदा भेल। रस्तामे किसलय बाजल–

"पार्टनर, माघक सभ रबिकेँ मकड़क मेला होइ छै, एक तँ ओहिना माघ मास तैपर लोक भोरेसँ नहा-नहा भोला बाबाक जलधार करै छैथ। मकड़क सटले पनरह फागुनकेँ शिवरातिक मेला सेहो होइए।"

‘मकड़’ आ ‘शिवराति’ सुनि किशोर पेटक बात पेटेमे रखि चुपे रहल। दसे दिन बीचमे समय अछि तखन अनेरे डेढ़ मासक बात विचारब नीक नहि। जे अछि तहीमे ने अँटावेश करैक अछि। अँटावेश नै देखि किशोर बाजल–

“आब आगूक बात छोड़ू। कल्हुका मेला देख, मनकमना पुरा लेब।”

किसलयक गाम। पिता दू भाँइ, एक भाँइ गिरहस्ती करैत दोसर हाइ स्कूलक शिक्षक। आन गामक स्कूल रहने गौरीनाथ बाहरे रहै छैथ, मुदा बाल-बच्चा आ परिवारकेँ गाममे रहने अठवारे शनिकेँ गाम आबि जाइ छैथ। ओना, किशोर आ किसलय गौरीनाथसँ पहिने पहुँच गेल छल मुदा साँझ पड़ैत गौरीनाथो पहुँच गेला।

दोसैर साँझमे दरबज्जाक ओसारक चौकीपर तीनू गोरे किशोरो, किसलयो आ गौरीनाथो बैसला। चाह-पान भेल। चाह पानक पछाइत गौरीनाथ किशोरकेँ परिचय पुछलैन–

“बाउ, अहाँक परिचय?”

परिचय सुनि किशोर तारतम्य करए लगल जे परिचय की? ईहो भऽ सकैए जे किसलयक संगी छी। मुदा संगीक की माने? की अपन नाओं, गामक संग पिताक नाओं कहिऐन? सभ अपरिचित, केना बुझता। लगले मनमे उठलै– अपन भाषा अपन सोभाव आ अपन जिनगी। मगहीमे अपन परिचय दैत किशोर बाजल–

“चण्देश्वर स्थानक मकड़क मेला सुनै छी, जखन ऐठाम छीहे तखन मेला मेलक किए ने देखि ली, तँए एलौं।”

गौरीनाथ बुझि गेला, मेलाक मेल सुनि बजला–

“बाउ, मनुक्खक रूप अनमोल छै, केना सिरजन, पालन आ संहार करैए से जानब असाध अछि, मेला तँ मेला छी पूजो होइए आ

ताड़ी-दारूक दोकान सेहो रहैए। नीक आकि अधला बिनु देखने-सुनने बुझ्झो तँ नहियेँ सकै छी। भने समैपर चल एलौं, मकड़क समय आबिये गेल अछि।”

गौरीनाथक बात विरामक सीमानपर पहुँचलो ने छल आकि छोटकी बेटी राधा दोहरौनी चाह नेने पहुँचलै। मकड़क मेला सुनिते राधाक मन लुसफुसाएल। हाँइ-हाँइ चाहक गिलास सभकेँ हाथमे धड़बैत बाजल– “बाबू, काल्हि मकड़ कहाँ छी?”

राधाक बात सुनि गौरीनाथो आ किसलयो-किशोर हिसाब जोड़ि मिलबए लगल, किए ने काल्हि मकड़क मेला हएत? बाल-बोधक बातकेँ केते बुझल जाए, ईहो तँ प्रश्न ऐछे। मुदा दस बर्खक बच्चा झूठो तँ नहियेँ बाजि सकैए। केकरो मुँहक सुनल बाजल हएत। जँ नै होइक कारण पुछबै, सेहो नीक नहि। जँ एतबे सुनने होइ जे कौल्हुका मकड़ नै हएत। मुदा चुपो-चुप रहब तँ नीक नहियेँ। एते तँ जरूर बाजत जे फल्लाँक मुहेँ सुनलौं...।

गौरीनाथ पुछलखिन– “बुची, कौल्हुका मकड़ किए ने हएत?”

राधा–

“कौल्हुका फोंक अछि।”

‘फोंक’ सुनि किशोर मने-मन विचारए लगल जे ‘फोंक’ तँ मटर-बदाम होइ छै, मेला केना ‘फोंक’ हएत! मखान फोंकला होइ छइ। ओना, मटरो-बदाम दोहरी फोंक होइए। किछुमे दने ने भरै छै आ किछुकेँ पीलुए खा जाइ छइ। मुदा से तँ किछु ने बाजल..!

गौरीनाथ राधाकेँ कहलखिन–

“आँगन जा माएसँ पुछि आबह जे ठीके कौल्हुका मकड़ फोंक जाएत?”

माइक नाओं सुनि राधा जिद्द करैत बाजल–

“अपना टोलक बहुत गोरे मेला जाइले रहैथ, जखन भाँज लगलैन जे कौल्हुका ‘फोंक’ जाएत, तखन ऐगला मकड़ देखैक विचार केलैन।”

किसलय–

“किशोर भाय, अहिना धोखा-धोखी होइ छइ। एलहाक चिन्ता छोड़ू। जँ जिनगी बँचल रहत तँ केते अवसर भेटत।”



तिथि: 10 अप्रैल 2014, शब्द संख्या: 1744

केते लग केते दूर

पैछला मासक पत्रिकाक अंकमे आभाक कविता ‘केते लग केते दूर’ छपलैन। ओना, किछु पढ़निहार एहनो होइ छैथ जे पत्रिका हौउ आकि पोथी, शुरूसँ शुरू करैत अन्त करै छैथ आ किछु एहनो होइ छैथ जे पढ़ैसँ पहिने पत्रिका-पोथीकेँ उनटा-पुनटा पसिनगरसँ पढ़ब शुरू करै छैथ। रवीन्द्रोकेँ सएह भेलैन। पत्रिकाकेँ उनटैबते आभाक कवितापर नजैर गड़ि गेलैन। कविताकेँ पहिने लड़ी-कड़ीक दृष्टिसँ पढ़लैन। पछाइत झड़ीक दृष्टिसँ पढ़ब विचारि लेला। लड़ी-कड़ीमे केतौ कोनो बेवधान नै बुझि पड़लैन, मुदा झड़ीमे वौआ गेला...।

आभा अपन परिवारक वृत्त बनौने छेली जखन कि आभाक संग जे रवीन्द्र अपन जिनगी बितौने छला, से भाव पकड़ा गेलैन। कविता पढ़ि रवीन्द्रक मुहसँ अनायास निकललैन– “सचमुच आभा दूर चलि गेल आकि..?”

चालीस बर्ख पूर्व रवीन्द्रकेँ आभासँ भेँट भेल। सेहो ओहिना नहि, मोटर साइकिलक एक्सिडेन्टक पछाइत। हाइ स्कूलक एगारहम कक्षाक छात्रा आभा, मोटर साइकिलसँ तरकारी बजार जाइ छलि, अनासुरती मोड़पर साइकिल सवार रवीन्द्रकेँ गाड़ीक धक्का लगि गेल। जइसँ साइकिल सहित रवीन्द्र सिमटीक सड़कपर खसि पड़ल। दहिना बाँहिक कौहनीक जोड़ छिटैक गेल!

एक्सिडेन्ट भेला पछाइत जहिना लोक हाथ-पएर उठा-उठा

देखैए जे टुटो-फाट भेल आकि चोटेटा लागल, तहिना रविन्द्रो पहिने डेन उठा देखैत रहए आकि बिच्चेमे आभा मोटर साइकिल रोकि लग आबि रवीन्द्रकेँ पुछलक– "देहमे दर्द बेसी तँ ने अछि?"

दर्द पुछैक कारण आभाक छल जे जेते बेसी दर्द तेते नमहर चोट। आभाक बाजब सुनि रवीन्द्रक मन अपन चोटसँ बहैट आभाक चेहरापर लटैक गेल। शरद ॠृतुक गुलाब जकाँ कण-कण करैत आभाक चेहरा। ओना, रवीन्द्रक नजैर आभाक रूप-लावण्यपर पड़ल मुदा आभाक नजैर दोसर दिस छल। दोसर दिस ई जे आभा अपनाकेँ अपराधिनी बुझि सेवाक विचारसँ आएल छल। मनमे नचै छेलै जे ओना, केहनो अपराधक वा नीच काजक पैतकार हटिये कऽ कएल जाइ छै मुदा जँ अपराधक वा नीच काजक पैतकार सर-जमीनपर केलाक पछाइत जे दर्द भरै छै ओ बेसी नीक होइ छइ।

बिनु बुधि-विवेकक जहिना मोटर साइकिल तहिना साइकिल। तैबीच जँ भिड़न्त भेल तँ भेल। सम्भवो अछि, जँ चलौनिहारक नजैर केम्हरो दोसर दिस रहल होइ वा ब्रेक ढील पड़ि गेल होइ। चोटसँ जँ शरीरक कोनो अंग-भंग भेल हएत तँ ओकर पैतकार कएल जा सकैए। जइसँ जेतए जेते धरि सम्भव हएत, तेतए तेते धरि पूर्व रूप बनि सकइ। रवीन्द्रक हाथ पकैड़ आभा उठौलक। जइ बाँहिक जोड़ छिटकल छल ओकरा उठैबते रवीन्द्र किलकारी मारलक। किलकारी सुनि आभा बुझि गेल जे भरिसक बाँहि टुटि गेल छइ। फुलब सेहो शुरू भेल। मने-मन आभा निश्चय केलक जे रवीन्द्रकेँ अस्पताल लऽ जाएब नीक हएत। मुदा अपन गाड़ी आ रवीन्द्रक साइकिल केना जाएत। पहिने लगक दोकानदार लग जा आभा बाजल–

"एक्सिडेन्ट भऽ गेल अछि, अस्पताल जाएब जरूरी अछि, तँए अहाँ साइकिलो आ गाड़ियोकेँ देखैत रहब।"

कहि दोकानक आगूमे साइकिलो आ गाड़ियो आनि ठाढ़ कऽ देलक आ रिक्शापर रवीन्द्रकेँ अस्पताल लऽ गेल। जाँच-पड़ताल भेला पछाइत कौहनी-जोड़क प्रश्न उठल। सम्पन्न परिवारक आभा, पाइक परवाह नहि। डॉक्टरकेँ कहलक–

“डॉक्टर साहैब, जेते बढ़ियाँ आ जेते जल्दी नीक होइ, से उपय करि दियौ।”

सुइया-दबाइक संग पलश्तर भेल। अस्पतालक चरपाइपर एक भाग रवीन्द्र पड़ल आ एक भागमे आभा बैसल। तैबीच आभाक पिता कोर्टमे एक्सिडेन्टक समाचार सुनलैन। नीक ओकील दिवाकर बाबू। एक्सिडेन्ट सुनि बिच्चेमे कचहरीसँ अस्पताल विदा भेला।

ओना, दिवाकर बाबूक गिनती नीक ओकीलमे छैन, भलेँ पहिनेसँ आब कमाइयो कमि गेल आ जेहो सभ नीक कहै छेलैन सेहो सभ अधले कहए लगलैन अछि। तेकर कारण भेलैन जे अपन पत्नी मुइने बाल-विधवासँ बिआह कऽ नेने छला। अपन पुश्तैनी सम्पैत सेहो आ कमाइयोसँ दरभंगेमे भारी-भरकम मकान बनौने छैथ। जाति-बेरादरीसँ खान-पान टुटि गेलैन, सामाजिक सम्बन्ध ढील भऽ गेलैन। मुदा तेकर मिसियो भरि गम नै छेलैन। आभा पहिलुका पत्नीक सन्तान, मुदा परिवारमे कोनो दूजा-भाव नहि।

अस्पताल पहुँच दिवाकर बाबू रवीन्द्रकेँ पुछलखिन–

“बाउ, की नाओं छी आ केतए रहै छी?”

दर्दक पीड़ासँ रवीन्द्रक बकार असोथकित छल, तैयो बाजल–

“रवीन्द्र नाओं छी, रामपुर रहै छी।”

“ऐठाम की करै छी?”

“आइयेमे पढ़ै छी, होस्टलमे रहै छी।”

दिवाकर बाबूक मन नाचि उठलैन, ऐठाम कियो आन देखैबला नै छइ। नीक हएत जे अपने ऐठाम लऽ जा देख-भाल करब। डॉक्टरक विचारसँ रवीन्द्रकेँ अपना ऐठाम लऽ गेला। आभाकेँ देख-भाल करैक भार सुमझा देलखिन।

मास बितैत रवीन्द्रक पलश्तर कटल। कौहनी जुटि गेल। अखन धरि सभ दोख आभापर छल, किएक तँ आभाक गाड़ीसँ धक्का लगल छेलइ। मुदा मने-मन रवीन्द्र बुझै छल जे गलती हमरे अछि। गलती ई जे कुसाडि चलबै छेलौं। जेकरा प्रकट केने पाशा बदैल जाएत तँए चुपे रहल।

पाँच बजेक बेरुका समय, दिवाकर बाबूकेँ देखिते रवीन्द्र बाजल–

"चाचाजी, अपने लोकैन बहुत सेवा केलौं, काल्हि चलि जाएब।"

ओना, रवीन्द्रक प्रश्न दिवाकर बाबूसँ छेलैन तँए आभा बीचमे किछु बाजए नै चाहैत। दिवाकर बाबूकेँ आभा छोड़ि दोसर सन्तान नहि, समटल परिवार, तीनियेँ गोरेक। दिवाकर बाबू किछु बजैसँ पहिने आभापर नजैर देलैन। नजैर दइक कारण छेलैन आभाक विचारकेँ पढ़ब। आभासँ एक्सिडेन्ट भेल, इलाज भेल, की आभाक मन मानि रहल अछि जे परतबएक पैतकार भऽ गेल आकि किछु औरो बाँकी अछि। पिताक नजैरसँ नजैर मिलते आभा बाजल– "बाबूजी, रवीन्द्रकेँ अपने ऐठाम रखि लिअ। अखन धरि चोटक इलाज ने भेल, मुदा चोटाएलकेँ उठाएबे ने मनुक्खता भेल।"

मुस्की दैत दिवाकर बाबू अपन सहमति दऽ देलखिन।

दोसर दिन होस्टलसँ रवीन्द्र अपन सभ सामान लऽ आभाक संग चलि आएल।

समय बीतल। छह मासक पछाइत रवीन्द्र गाम आएल। परिवारमे केकरो रवीन्द्रक दुर्घटनाक जानकारी नहि। ने रवीन्द्रे जानकारी देने आ ने कियो आने। जहिना रवीन्द्रक जानकारी परिवारकेँ नै तहिना परिवारोक जानकारी रवीन्द्रकेँ नहि। ओना, रवीन्द्रकेँ पढ़ाइक खर्च परिवारसँ आएब बन्न भऽ गेल मुदा दिवाकर बाबूक बेवस्थासँ कोनो अखर नै होइ छेलइ।

गाम अबिते रवीन्द्र परिवारक रूप बदलल देखलक। जैठाम सिनेह-सिंधुमे परिवार-जन हरिदम डुमल रहै छल तैठाम अनोन-बिसनोन बुझि पड़लै। जेना केकरोसँ केकरो लागिये नहि। सभ बेलागिक।

रवीन्द्रक पिता दू भाँइ, एक भाँइक बेटा रवीन्द्र आ दोसर भाँइकेँ तीन बेटा, नगेन्द्र, महेन्द्र आ सत्येन्द्र। नगेन्द्र जेठ, तँए पिताक मृत्युक पछाइत घरक गारजन बनि गेला। दुनू परानी नगेन्द्र विचारलैन जे रवीन्द्रकेँ सम्पैतसँ बेदखल कऽ देब। बेदखलो करब बड़ कठिन नहियेँ। ने जमीनक भीर जाए देब आ ने घरक किछु देब, तैपर सँ कोर्टमे दू-चारि कित्ता मोकदमा कऽ देब। बाल-बोध रवीन्द्र छोड़ि कऽ पड़ा जाएत। मुदा नगेन्द्रक विचारकेँ महेन्द्र आ सत्येन्द्र मानैले तैयार नहि। ओ दुनू भाँइ रवीन्द्रकेँ पैत्रिक सम्पैतक आधा-अधीक हिस्सेदार बुझैत। एक तँ ओहुना केकरो बेइमानी करब नीक नहि, तैपर एक बंशक बीच करब तँ आरो नीक नहियेँ...।

आठे दिनक पछाइत रवीन्द्रक मन गामसँ उचैट गेल। बिना केकरो किछु कहने दरभंगा चलि आएल।

जहिना रवीन्द्र नीक विद्यार्थी तहिना आभो। दुनूक बीच कवि हृदय। ओकील साहैबकेँ अपने तेते काज जे परिवार दिस नीक जकाँ देखि नै पबै छला। मुदा एते रवीन्द्रकेँ कहि देलखिन– “रवीन्द्र,

आभोकेँ पढ़ा देबइ।”

साल भरिक पछाइत आभो मैट्रिक पास केलक आ रवीन्द्रो आइ.ए. पास केलक। कविता लीखब दुनूक पढ़ाइसँ जुड़ि गेल। दुनूक चिन्तनधारा एक रहने भावधारक लड़ी-कड़ी मिलैत-जुलैत। सोझे मिलबे नै करैत, शब्दक गढ़ैन आ भावक गढ़ैन सेहो मिलैत-जुलैत।

एम.ए. पास केलाक पछाइत रवीन्द्र परिवारक उलझनसँ हटि हाइ स्कूलमे नोकरी शुरू केलैन। दू सालक पछाइत आभा सेहो एम.ए. पास कऽ महिला कौलेजमे शिक्षिका बनली। ओना, दिवाकर बाबूक इच्छा जे रवीन्द्रकेँ अपने ऐठाम रखि आभाक संग बिआह करा देब। मुदा जातिक दूरी बीचमे टाट लगौने छल। तहूमे जाति-समाजक ओझरी सेहो लगले छेलैन।

किछु दिनक पछाइत रवीन्द्रो आ आभोक बिआह अपन-अपन बेरादरीमे भेल। दरभंगासँ हटला पछाइत रवीन्द्र दोहरा कऽ घुमि आभा ऐठाम नै आएल।

समय बीतल। आभा शिक्षिकासँ प्राचार्य बनि सेवा निवृत्ति भेली, रवीन्द्र सेहो भेला।

परिवारक उलझन तेना उलैझ गेल जे रवीन्द्र अपन दरमाहापर अपन परिवार ठाढ़ केलैन। गामसँ हटि, दोसर गाममे। अपन घराड़ी कीनि घर बना रहए लगला। ओना, वृत्तिये रवीन्द्र शिक्षासँ जुड़ल रहला, मुदा सृजनक काज ढील पड़ि गेलैन। हृदैमे संवेदना रहितो किछु रचि नै पबैथ, मुदा आभाक सृजन क्रिया आगू बढ़ल, बहुत आगू बढ़ल। अनेको कविता संग्रहक संग महाकाव्य सेहो रचली।

पत्रिकाक कविता- ‘केते लग केते दूर’ पढ़ि रवीन्द्र मने-मन विस्मित होइत आभाक जिनगी देखए लगला। बेर-बेर मनमे उठैत

रहैन जे जइ आभाकेँ हाथ पकैड़ कहियो पढ़बै-लिखबै छेलौं, आइ ओ केते दूर चलि गेल!!



तिथि: 14 अप्रैल 2014, शब्द संख्या: 1252

अभिनव अनुभव

अनचोकेमे लाल बाबाक प्राण छुटि गेलैन, मरि गेला। अपनो अनचोकेमे रहला आ परिवारोक सभ सएह रहल। बाधमे रही, गहुमक जजात देखि मन झुझुआ गेल रहए। झुझुआ ऐ दुआरे गेल रहए जे पौरु साल अगते नवम्बरमे हाइब्रिड बीआ, नीक खाद भेट गेने, गहुम उपजबैक पुरस्कार अनुमण्डलमे भेटल रहए मुदा ऐबेर बितैत कातिक तेहेन बर्खा भेल जे पैछला हालकेँ तीन मास आरो बढ़ा देलक। किसान छी गहुमक खेती नै करब तँ अपने की खाएब आ गाए-बरद लेल भुसी केतएसँ औत। अचताइत-पचताइत पूसमे गहुम बागु केलौं, शीश निकैलते तेहेन पछिया रमकल जे दूधे सुखि गेल, दाना भरबे ने कएल।

अपने अनचोकेमे लाल बाबा ऐ दुआरे रहला जे गंगाकातक नवका परोड़ कीनि आँगन पठा कहने छेलखिन–

“नव बर्खक नव तरकारी छी तँए थोड़े तड़ि लेब आ थोड़केँ रसदार तरकारी बना लेब, तहूमे अखन नवका संगी अल्लू आबि गेल अछि, अँचार तँ चटपटमे नै बनि सकत, मुदा पका कऽ आकि उसैन कऽ सन्ना-चटनी तँ बनि सकैए। सन्ना चटनी ऐ दुआरे जे बिना लोढ़ी सिलौटसँ नै बनत। सन्ना तँ सानि कऽ, गुड़ि कऽ हाथसँ बनौल जाइ छइ।”

कहि माल-जालक नेकरममे लगि गेला। खेबाक समय भऽ गेल, अपनो नहाइक विचार करिते रहैथ आकि बिच्चेमे प्राण छुटि

गेलैन, मरि गेला। आगू अबैबला थाड़ीए उनैट गेलैन।

ओना, बाधेमे उड़न्ती सुनलौं, मुदा सभ उड़न्ती ने उड़न्तीए होइए आ ने सचे। अपनो मन अदहा-छिदहा भऽ गेल। घर दिस विदा भेलौं। रस्तामे हुअए जे झूठे कियो बाजल जे लाल बाबा मरि गेला। मुदा बिना अपना चश्मे देखने झूठ-सच केना मानब। फेर मनमे भेल जे जँ मरिये गेल हेता तँ कइए कि सकै छी। फेर भेल जे आन दस-दस साल ओछाइन धेने मरै छैथ, से कहाँ भेलैन! तखन जरूर नै मरल हेता।

घरपर अबिते देखलौं जे लोकक करमान लगल अछि, आवाजसँ मृत्यु घोषित भऽ गेला, जइसँ लोक अपन-अपन बेथा-कथा कानि-कानि प्रकट कऽ रहल छैथ। दादी सेहो लगमे बैस कानि-कानि बाजि रहल छेली–

"मरै बेर किछु कहलैन नै..!"

दादीकेँ पुछलयैन–

"दादी, बाबा किए एना अनचोकेमे मरि गेला?"

बजली–

"यएह नै बुझै छी जे एहनो मरब होइ।"



तिथि: 16 अप्रैल 2014, शब्द संख्या: 326

खोंटकर्मा

करिया कक्काक देहमे जेते रुइयाँ नहि, तइसँ बेसी नाओं छैन। रंग-रंगक नाओं। कियो 'करिया काका' तँ कियो 'करिया भैया', कियो 'करिया घोड़ा' तँ कियो 'करिया हाथी', कियो 'करिया गाए', कियो 'करिया बाघ' तँ कियो 'करिया बिलाइ' कहै छैन...।

एते रंगक नाओं ओहिना थोड़े छैन आकि तइ पाछू कारणो छैन। कारण छैन जे काजकेँ तेना उतारि जिनगी बनौने छैथ जे काजे सोझ कऽ देने छैन। काज सोझ भेने चालियो-ढालि आ बोलियो-वाणी सोझ भऽ गेल छैन जइसँ ने केकरो दोस बुझै छथिन आ ने दुश्मन। सभ सेर बरबैर।

जहिना छिड़ियाएल फुलवारीक दुनियाँमे छिड़ियाएल फुलो आ फूलसँ फड़ैत फड़ो लुधकल रहैए, आ जे तकनिहार अछि ओ अपन फूल-फड़ ताकि रसो पीबैए आ सुगन्धो लइए, मुदा दुसनिहारो तँ दुसिते अछि। ओना, अपन-अपन मरजी तँ सभकेँ अपन-अपन छइहे। जँ कियो अड़हुलकेँ सुगन्धित आ बेली-चमेली, जुहीकेँ ललगर-रंगगर कहत तँ कहत! तेकरा आन की करतै। परखनिहार ने परखत जे सुगन्धित बेली, चमेली, जुही होइए आ रंगगर अड़हुल...।

घरसँ निकैलते जखन कियो करिया कक्काक सोझ पड़ै छैन तँ बुझले काज-बात जकाँ पुछि दइ छथिन– "तोहर गाए पाल खेलकह की नहि?"

कक्काक अमृत बोल किए ने मलकारकेँ नीक लगतै। अपन

बिवसता देखबैत कहबे करै छैन– “खोराकी तिरोटक दुआरे गाए ठाँठ भेल जाइए, की करबै?”

“हाय रे पुरुख! गाए ठाँठ भेल जाइए आकि जिनगी ठाँठ भेल जाइए?”

मुदा निर्णायक दौड़ अबिते कक्काक विचार चढ़ि जाइ छैन। तहिना गामक आनो-आन अंगीतक संग होइ छैन। डेढ़-बर्खक बच्चा जहिना खसबो करैए, कनबो करैए आ चुप भऽ उठि कऽ ठाढ़ो होइए, जइसँ माए-बाप, दादा-दादी, भाए-बहिन रंग-रंगक नाओं रखि बच्चाक आनन्द उठबैए तहिना करिया कक्काक सोभावसँ गामक लोक अपन-अपन नाओं टेब रखि देने छैन। अपनो मन कहै छैन जे हजार नाओं, हजार हाथ आ हजार आँखि शुभ छी, अशुभ केना हएत।

फागुनक उतारक समय, परसुए फगुआ हएत। दरबज्जापर बैसल करिया कक्काक मन तेना फुला गेलैन जे हँसी उफैन गेलैन। ठहाका मारि हँसिते रहैथ, तखने पत्नीक नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते पत्नी पुछलकैन–

“कथीक ठीठीयैनी छी, केतौ किछु पेलौंहेँ की?”

पत्नीक प्रश्न करिया कक्काक हँसीक हँसेरीकेँ रोकए चाहलक, मुदा फुलाएल मन करिया कक्काक! बजला–

“फागुन कि कोनो दरिद्राहा मास छी जे किछु ने भेटत। रजमास छी, रजमास। एक तँ ओहिना जाड़ जड़ाइत जरि गेल, उनीक उलौल चद्दैर बिछा एअर कंडीशन समय बना देलक, तैपर तीसी फूलक माछी आम-जामुनक गाछ पकैड़ घरैयासँ बनरमाछी बनि जान बकैस देलक..?”

‘जान बकसब’ सुनि काकी बिच्चेमे टीपलकैन– “असल

मछिहारा समय आब औत कि चलि गेल!”

“नवका औत पुरना चलि गेल। अच्छा छोड़ू गाछ-बिरीछक गप ओ अकासमे अछि तँए अकासी भेल। माटिक तँ झूठ नै हएत?”

“नहि।”

“अच्छा अहीं कहू जे खरिहाँनमे जे केराउ-बदामक कौंटका ढेरियाएल अछि ओइसँ कोठी नै भरत?”

“हँ से तँ भरबे करत।”

“मकुआ जकाँ जे खेतक गहुम बनि गेल अछि, ओकर दुख किए ने बुझै छिऐ। वेचारा कानि-कानि कहैए जे अहाँक सेवा कएल छी तँए अहींक शरण धड़ब। तेहेन चण्डाल रौद-बसात आबि रहल अछि जे गरदैन पकैड़-पकैड़ छिड़िया देत। सेवाक फल मेवा होइते छै किने, एक पनरहिया ओरहा खुएलक, आब भुज्जा खुआएत। सुड़-सुड़, मुड़-मुड़ दुनू। कोनो कि चुड़ा छी जे एकभग्गु अछि। अखरा भूजि फकड़ा भुज्जा खाउ आकि पानिमे फुला भुजफुल्ला खाउ। तेतबे किए! गहुमक रोटी बदामक दालि खाउ आ हरीक गुण गाउ! ऐसँ बेसी वसन्ते की आ वसन्तीक धुनियेँ की।”

करिया काका परिवारक बाबा छैथ। चारि बेटा चारि पुतोहुक संग पोता-पोतीक सोरहा छैन्हे। जमगर परिवार। जेठुआ गरे जकाँ कक्काक उमड़ैत मेघ देखि काकीक मनमे भेलैन जे अन्हर उठत आकि झाँट-पानि हएत आकि ठनका खसत से के कहलक। तँए नीक हएत जे पत्नी जकाँ सञ्च-मञ्च भऽ बैसबे नीक। किछु बरसता तखने ने कथुक जरूरत हएत। बिना बरखे छत्ते की आ बिना ठनके गोबरक ढेरीए की।

काकीक जमल आसन देखि करिया कक्काक मन उमड़ैत हुमड़लैन– “परसुए ने फगुआ छी?”

एक तँ ओहिना कोनो पाबैनक नाओं सुनि काकीक मनमे समुद्री जुआरि आबि जाइ छैन तैपर फगुआक नाओं सुनि सुनामी उठि गेलैन। जेना बिनु बुधिक आदेशे हाथ-पएर उठि जाइ छै तहिना देहसँ बुधि धरि, काकीक मन फलैक गेलैन। मकै-लाबाक फूल जकाँ मुहसँ भड़भड़ेलैन–

"एँह, ओइ सालक फगुआ जे मचल रहए! मोन अछि किने?"

पत्नीक बात सुनि करिया काका गुम भऽ विचारए लगला, ओइ साल-ऐ साल की? फगुआ तँ फगुआ छी। वसन्त रितुक मध्य मासक पुरणिमा दिन। ओना, जाड़क भीजल-तीतल जड़ाएल सुरूजोक दिनक कूह फटि गेलैन। प्रकृतक संग तँ समैयेक धुनि ने धुधुआएत। रंग-रभससँ भरल फागु चैत चैताबरक आगवानी तँ करबे करत...।

बजला–

"बेरुका उतार आबिये गेल, जँ पाँचो दिन भाँग नै पीलौं तँ फगुआ पाबैनक मस्तीए की? कनी भाँगक जोगार करू।"

करिया काका ऊपरे-घारे रहैथ तँए अँगनाक भाँज नै बुझलैन, मुदा अँगनाक बहुसंख्यक भाँग पीब नेने आ धिया-पुता दिस बँटवारा होइत रहए। काकी उठि आँगन पहुँचते देखली जे धिया-पुता भँग-भोजमे लगल अछि। किए कोनो चेतनपर शंका करितैथ आकि चेतने मुँह फोड़ि कहितैन जे अँगनामे भँग-भोज भऽ गेल। मरदा-मरदी पछुआएल छैथ। मुदा काकीएकेँ कोन समुद्र उपछैक छेलैन जे हीरा-मोती तैकतैथ। लऽ दऽ कऽ एक गिलास भाँग पति लग पहुँचाएब छेलैन। मुदा सोझे गिलासमे लऽ गेने घटैक सम्भावना, एक तँ ओहिना जहर-माहुर भेल सेहो जँ अधपेट्टाक अजश हुअए से नीक नै बुझि लोटामे दू गिलास भाँग आ गिलास नेने काका लग काकी

पहुँचली। अँगनाक चुगली घरक गारजन लग करब काकी नीक नै बुझलैन। मुदा शिकारी जकाँ काका पुछलखिन–

“सभ कथुक ओरियान कएले छेलए?”

अनेरे ‘हँ’कैँ ‘नै’ आ ‘नै’कैँ ‘हँ’ बनबैमे लोक तीस-तीस बरिस, चालिस-चालिस बरिस कोट-कचहरी रेङ्गैत रहैए से नीक नै...।

बजली–

“पाबैनक दिन छिऐ, पाबैनक सभ कथुक ओरियान तँ घरनी सभकेँ करैये पड़तैन किने?”

काकीक जवाबकेँ करिया काका काट-खोंट केने बिना मानि एक गिलास भाँग पीब काकीकेँ कहलखिन–

“शिवजीक परसाद छी।”

पान-जर्दा खाइते-खाइते जेना करिया कक्काक मन हुमड़लैन। बजला–

“अहाँ केहेन खोंटकर्मा छी से बुझै छिऐ?”

ओना, खोंटकर्मा रहितो काकी शब्दक माने नै बुझलैन। जहिना बिनु बुझल शब्द अपन भाव बदैलो लइए तहिना काकियोकेँ भेलैन। मुदा शब्दक छीलैन करैत बजली– “की खोंटकर्मा छी?”

काकीक जिज्ञासा जेना करिया काकाकेँ आगू बजैक अनुकूल अवसर देलकैन। बजला–

“अहीं डरे तीन साल पहिने झूठ बाजल रही।”

‘अहीं डरे तीन साल पहिने झूठ बाजल रही!’ काकी विस्मित हुअ लगली। मुदा झूठ बातपर बेसी रग्गड़ भेल नै रहैन तँए बिसैर गेल छेली तँए अकचकेली नहि, बजली–

“अनेरे झूठ-फूस बना दोख लगबै छी?”

"झूठ-फूस बना किए दोख लगाएब। कहिये दइ छी।"

करिया कक्काक बात सुनि जेना काकी सहमए लगली। मुदा जैठाम दुइए परानीक बीचक गप अछि तैठाम सहमैक जरूरते की? नीक-बेजए, सभ रंगक गप तँ दुनू गोरेक बीच होइते अछि। तखन अनेरे माथमे उरकुस्सी लगाएब नीक नहि। बजली–

"की डरे झूठ बाजल रही?"

भाँगक लहकीमे गंगाक सिहकी करिया कक्काक मनमे एलैन। चितवन नाचि उठलैन। बजला– "तेसर साल जे मुंगेर गेल रही आ घुमि कऽ जखन एलौं तँ पुछने रही ने गंगेजलटा अनलौं आकि गंगामे डुमो देलौं।"

'गंगा'क नाओं सुनि काकीक जिज्ञासा बढ़लैन। बजली–

"कोनो कि अधला पुछने रही?"

मुस्की दैत करिया काका बजला– "हम अधला कहाँ कहलौं, झूठ कहलौं। भेल कि रहए से आइ कहै छी...।"

बिच्चेमे काकी टोकलकैन– "एते दिन किए ने कहने छेलौं?"

"अहाँक डरे नै बजलौं।"

"की डर?"

"यएह जे गंगाक दछिनबरिये घाटमे नहेबो केने रही आ गंगाजलो भरने रही। मुदा...।"

काकीक मनमे उत्तर-दच्छिन गंगा नचलैन। तखन तँ मग्गहेक गंगा जल अनेने छला! बजली–

"दछिनबरिये भाग नहेनौं रही आ शीशीमे गंगाजलो भरने रही?"

सिनेह सिक्त हृदए खोलि करिया काका बजला–

“ओही घाटक जल बाबार्कें सेहो चढ़ै छैन। जँ कनीए झूठ बजने उत्तर-दच्छिन एकघट्टा बनि जाए, तँ अधले की भेल?”

“हँ से तँ नहियेँ भेल।”



तिथि: 19 अप्रैल 2014, शब्द संख्या: 1184

किछु ने

सेवा निवृत्तिक दू सालक पछाइत रवि शंकर गाम आबि दोसरे दिन घुमि कऽ पुन: बेटाक डेरापर बंगलोर पहुँचला। किरण कुमार ड्यूटी गेल, मुदा पत्नी डेरापर, तँए रवि शंकर तँ ओसारक कुरसीपर असगरे बैसला मुदा पत्नीक पूछ पुतोहु नीक जकाँ पकड़लैन। ओना, जलखै, पानि, चाह रवि शंकरोकेँ पहुँचलैन, मुदा भोजनक मरजाद तँ ओ ने भेल जे जेहने भोज्य आँखिक आगू तेहने जँ कानोक हुअए, मुदा से तँ बिआहे आ घर देखीए-टा मे होइए, बाँकी तँ बँकियौता होइत राज-रजबारमे नीलाम होइए।

गामेक स्कूलसँ रवि शंकरक पढ़ाइक जिनगी शुरू भेल। बच्चेसँ ठरकन्हक तँए अपन संगी-साथीमे सभसँ अँखिगर-कन्हगर। ओना, गामक बुड़हा गुरुजी अखनो रवि शंकरकेँ मने छैन। केना गुरुजी बिसरल जेता, विद्यालयक प्रमुख काजमे फुलवारी सेहो छल, सभ विद्यार्थी करै छल। मुदा तइमे रवि शंकर एते जरूर केने छला जे जहिना विद्यालयक फुलवारी तहिना अपना घरोपर दरबज्जाक आगू लगौने छला। मुदा संस्कारो तँ संस्कार छी तहूमे रवि शंकर सन संस्कारी।

एक दिन बजार गेल। आम आ बेल देखि मन हलसलै, कीनि लेलक। गामपर गुद्दो खेलक आ आँठीकेँ रोपि नीक फलो भेल। तँए आम-बेल पकै दिनमे पनरह दिनक छुट्टीमे रवि शंकर गाम अबैत रहला। अपन इच्छा ओही दिनसँ गाममे रहब छेलैन जइ दिन नोकरी

करए डेग उठौलैन। कोनो गामक तँ हिसाब शौर्ट-कटमे यएह ने हएत जे मरैसँ केते दिन पहिनेसँ गाममे छी आ जनमला पछाइत केते दिन धरि रहलौं। जिनगीक ओ अमूल बीस बर्ख, जइमे कियो भिक्षु बनि भिक्षाटन करए देश निकैल जाइए, तँ कियो...।

रवि शंकर सूर्यपुरेक नै मिथिलांचलक ओइ माटि-पानिक उपज छैथ जे अनेक चिन्तकक अनमोल विचारसँ मिथिलाक घरती सींचलैन। ओहन रवि शंकर। औझुका जिनगीक चोटीक शिखरपर पहुँचल रवि शंकर। अपने सन बेटा पुन: समरपित कऽ गामेमे रहबाक विचार केलैन। गाम आ शहर ओइ विचारक उपज छी जे बजारू लहैरमे भँसियाइत अछि, मुदा मनुक्ख तँ ओ ने जे दुनियाँक कोनो कोण, कोनो जगह रहि रसपान करए।

सायंकाल। भरि दिनक काजक निवृत्तिक पछाइत चैन-बेचैनक हिसाब फड़िया, दिन-रातिक सीमापर बैस रवि शंकर आ किरण कुमारक बीच गप-सप्प होइ छैन।

किरण कुमार–

“बाबू, कहलिऐ जे गामे रहब से..?”

किरण कुमारक प्रश्न सुनि रवि शंकर धकमकेला नै मुदा अपन केलहा नष्ट भेल देखलैन...।

बजला–

“आइए नहि, अखनो मोन अछि जे जइ दिन नोकरी करए विदा भेल रही नोकरीकेँ नापि-जोखि नेने रही, बाँकी जिनगीक लेल गाम ओहिना मनमे गरल रहल। अखनो टहैक रहल अछि मुदा छुटि नै पाबि रहल अछि।”

बजैत-बजैत आँखि भड़भड़ा गेलैन। जेना एक्केबेर सौनक उमड़ैत मेघ पसैर गेल होइ तहिना भेलैन। किरण कुमार आँकि तँ नै

सकल मुदा अँकैक कोशिश करैत पुछलकैन– “बाबू, बेसी फिरीशान बुझि पड़ै छी?”

बेटाक बँटैत दुख पबिते रवि शंकर बजला–

“बौआ, कोसी धार गामक पेटकेँ चीर नासी बनि नाश कऽ देलक। अपन जे गोरहा खेत छल, जइमे धान रोपबो करै छेलौं आ नवानमे काटि कऽ चुड़ो खाइ छेलौं ओ बाउलसँ बुर्जा बनि गेल अछि! केतए गेल द्वार-दरबज्जा आ केतए गेल बाड़ी-फुलवारी..!”

किरण कुमार–

“आगूक की विचार करै छिऐ?”

बेटाक मुहेँ ‘आगूक विचार’ सुनि रवि शंकरक मनमे जेना सौंसे जिनगीक शक्ति चमैक उठलैन। फाटक बान्हल पानि जकाँ आस्तेसँ रवि शंकर बजला–

“बौआ, जहिना वौआएल जिनगी सभ दिन रहल तहिना वौएबे करबह, तखन तँ आगूक दिन-राति ऐछे केतेटा जे तइले चिन्ता करब।”



तिथि: 22 अप्रैल 2014, शब्द संख्या: 503

अप्पन-बीरान

आने गाम जकाँ हरिहरपुरो। स्वतंत्रता आन्दोलन जहिना सभ गाममे तहिना हरिहरपुरोमे। ओना, पाँच साए परिवारक गाम मुदा गामक जमीन, गाछी-कलम आ पोखरिक चौथाइयो हिस्सापर गौंआँक अधिकार नहि। बारह-अनासँ ऊपरे सम्पैतपर अनगौंआँ जमीनदारक लड़ो-जड़ आ माशोक अधिकार तँ ऐछे।

आजादीक पछाइत लगानक वसूली जमीन्दारक हाथसँ निकैल गेल मुदा जमीनपर अधिकार तँ रहबे कएल। गौंआँक घर-घराड़ीक संग किछु गोरेक हाथमे किछु जमीनो, वेलगानक चलैत घराड़ियो आ मालगुजारी देने खेतो रहल, मुदा बारहसँ चौदह-अना परिवारकेँ मात्र घराड़ियेटा। तँए कि गामक जमीन गौंआँक कहियो नै रहल, से बात नहि। मालगुजारीक चलैत साले-साल नीलाम होइत गेल आ गौंआँक जमीन छिनाइत गेल। जइसँ गामक बारह-अनासँ ऊपरे जमीन अनगौंआँक हाथमे चलि गेल! गौंआँ खेतिहर किसान नहि, बटेदार किसानो आ बटेदार बोनिहारो बनि रहि गेल, अधिकांश बोनिहार।

मुदा जेना-तेना आ कमा-खटा कऽ गौंआँ बहरबैयाक सभ जमीन हथियौलक। जेना-तेना ई जे किछु जमीनपर वकास्तक झंझट तँ किछुपर सिकमी बटाइक, तँ किछु जमीन कीनियोँ कऽ गौंआँ अनगौंआँ सभकेँ गामसँ हटौलक।

बहरबैयाकेँ हटिते गौंआँ नमहर साँस छोड़लक। गौंआँक

हाथसँ जमीन ससरैक अनेको कारण भेल। तइमे किछु मालगुजारी आ किछु समाजक जाल-फाँस मुख्य रहल। सामाजिक जालो-फाँस अनेक रंगक रहल मुदा मुख्य रहल मरला पछातिक काल्पनिक दुनियाँक बेवहार। काल्पनिक बेवहार ई जे मुइला पछाइतक खर्चक जे विधि-विधान रहल ओ समाजक रीढ़केँ तोड़ि देलक! समाजक एहेन दबाब रहल जे खेतो-पथार खुशीसँ बेचबैत रहए। एक तँ गामक लोकक हाथमे गामक सम्पैत नहि, तैपर प्राकृतिक प्रकोप सेहो! ओना, तीन रंगक समय मुख्य रूपसँ छल मुदा तीनूमे सेहो तीन-तीन-चरि-चरि रंगक समय भेल। एक भेल जे अनुकूल मौसम, अनुकूल मौसमक अर्थ भेल जे गोटे साल एहेन होइ छल, अखनो होइए, जे बारहो मास अनुकूल समय बनै छल। कोन समय केहेन हवा चलत, कोन समय केहेन गरमी पड़त आ बरसातक केहेन रूप-रंग रहतै। दोसर तरहक समय बनैए, रौदियाह। जइ साल प्रतिकूल प्रकृति रूप पकड़लक तइ सालक सुसमय-कुसमय बनए लगै छल, एक रौदी दोसर दाही! ने रौदियाहक कोनो ठेकान आ ने दाहीक कोनो ठेकान। गोटे साल शुरूहेसँ समय बगदल जे अन्त धरि, रौदियो आ बरसातो लधनहि रहि गेल! जइसँ मनुक्खसँ लऽ कऽ मालो-जाल आ गाछो-बिरीछकेँ तबाह कऽ दइए। जे मेहनती किसानकेँ मन तोड़ि दइए। दोसर समय भेल जे अगतामे बिगैड़ कम-बेसी मध्यसँ सुधैर जाइए आ तेसर भेल जे शुरू-मध्य बिगड़ल रहल आ अन्तमे सुभितगर भेल...।

प्रकृतिक ई खेल सभ दिनसँ रहल, अखनो अछि।

ओना, स्वतंत्रता आन्दोलनमे 1934 इस्वीक पछाइत जे गामक लोकक मनसूबा जगल ओ धीरे-धीरे पश्त होइत गेल। पश्त ई जे स्वतंत्रता संग्रामक मञ्चपर आवाज उठल जे गामक जमीन गौंआँकेँ हेतै, ओकरो खेती लेल साधनक ओरियान हएत आ नीक

जकाँ उपजौल जाएत। जहिना मनुक्ख लेल पानिक जरूरत अछि तहिना मालो-जाल आ गाछो-बिरीछ लेल। ओना, अपन इलाका पहाड़ी नदीसँ छारल अछि, जे किछु एहेन अछि जइमे बारहो मास पानि चलैए, किछु एहेन अछि जे छह-मसिया छी आ किछु तीन-मसिया छी।

मुदा अबैत गेल बहैत गेल, अँटकबैक कोनो जोगाड़ नै भेल!

देशेक भीतर पंजाबो कृषि प्रधान राज्य छी। जेतेक इञ्च बरखा अपना सबहक हिस्सामे अछि ओते पंजाबक हिस्सामे नै छै, मुदा खेतीक मूल साधन पानिकेँ ओ कृत्रिम रूपेँ बनौलक। हम सभ ढोलके-हरिमुनियाँपर अपन सम्पन्नता गबैत रहलौं, अखनो गबै छी। जँ से नै रहल तँ दुनियाँक केहनो भू-मध्य सागरीय जलवायु किए ने हौउ मुदा जेते रंगक खेतीक उपज, चाहे अन्न हुअए आकि तीमन-तरकारी, फल-फूल हुअए आकि गाए-महींस, उपजैक अपना इलाकामे शक्ति छै, ओ दुनियाँमे केतौ ने अछि। तँए, मिथिलांचलक धरती शक्ति स्वरूपिणी धरती अछि। मुदा...।

जँ अपन बात अपने नै बुझब तँ ऐ दौड़ा-दौड़ीक दुनियाँमे केकरा ओते पलखैत छै जे अहाँक बात बुझि तलपट मिला देत? लोक सिनेमा स्टारक पञ्जी, खेलवाड़िक पञ्जी बनौता आकि अपन बाप दादाक आकि अपना गाम-घरक..?

हरिहरपुरेक दू भाए-भैयारीक परिवारमे सुपतलाल आ कुपतलाल। ओना, अखन ओ परिवार सभसँ नीक गाममे मानल जाइए मुदा छेहा बोनिहार परिवारमे दुनू भाँइक जनम भेल। बोनिहार परिवार रहितो माए-बाप सुतिहार, तँए आने गरीब परिवारक बच्चा जकाँ रहितो, केना बच्चा सियान चेतन बनि जिनगी बितौत, यएह सुतिहारी दुनू परानीक।

बच्चेसँ दुनू भाँइ–सुपतलाल आ कुपतलाल–मेहनती जे पिताक देखा-देखीसँ सीखने। बहरबैयाक धिया-पुता जकाँ प्लास्टिकक खेलौना नै जे खलिये फटक्का फोड़त, घरक वस्तुक खेलौना! ओना, बहरबैयाक हाथसँ गौंआँक बीच आएल सम्पैतसँ नमहर निसाँस छूटल मुदा तेकर बादो रंग-रंगक बिहंगरा ऐछे। एक तँ अहुना घटबी होइत-होइत जमीन करमघट्टू बनि गेल, तैपर घटबी रोकैक उपय नै भेने लोकक मनो घटए लगल! केना ने घटत? अहीं कहू जे धान रोपैक अछि, खादक पाइ नै अछि, रोपैक ताक सम्हारब आकि खादक प्रतिक्षामे...। कारण खाली विचारे नै अर्थक अभाव सेहो एकर सहयोगी बनल। तेतबे नहि, खेतक संग मौसमी पानि आ उर्वरा-शक्ति बढ़बैले छाउर-गोबरक संग अपन पुरान पद्धैतक बीज सेहो।

अदौसँ अपना ऐठामक गृहपति जहिना घरक सभ कलासँ सम्पन्न छला तहिना दुनियाँक बीच अपन कलाकारी रखितो छला। खेतीक पूर्णताक बोध छेलैन। जे केना अन्न उपजबै छला, आकि तीमन-तरकारी, फल-फलहरी। सबहक बीजसँ फल धरिक बोध छेलैन। ओना, एक रसाह लूरिकेँ जँ समैनुकूल लोहाक ओजार जकाँ पनियौल नै जाएत तँ ओहो भोथियए लगत। भोथियाइत-भोथियाइत एते भोथिया जाएत जे अपन चीने-पहचीन समाप्त कऽ लेत।

मात्र घर-घराड़ीबला सुपतलाल पिताक बतौल बाट पकैड़ पोसियाँ गाए बच्चेसँ पोसब शुरू केलक। परिवारक खर्चक भार पितापर। जहिना विद्याध्ययन लेल माता-पिता बच्चाकेँ अपना लेल समय दइ छथिन तहिना सुपतलालो- दुनू भाँइ-केँ पिता देलखिन। जहिना पाँच बर्ख चढ़िते गारजनोक नजैर आ आरो अभिभावकक नजैर विद्यालय दिस बढ़ैए तहिना सुपतलालोक पिताक नजैर गेलैन। आइक समय जकाँ तँ नै जे आन-आन देशक बोली-चाली नै सीखब

तँ कमा कऽ खाएब केतए! ओना, दुनू भाँइमे उमेरे तीन बर्खक अन्तर, मुदा संगी लेल उमेर ओते महत नै रखैत जेते संगी बनि काजकेँ सङौइर कऽ चलैक लूरि रखैए...।

पनरह बर्ख पुड़ैत-पुड़ैत सुपतलाल अपन पोसल गाइक सेवासँ पाँच कट्ठा जमीन कीनलक। सभ वस्तुक दाम कम तँए तीनियेँ साए रुपैए कट्ठा पाँच कट्ठा जमीन कीनलक। जइ दिन पिता पाँच कट्ठा जमीन बेटाकेँ देखलैन तही दिन परिवारक मन भरैत देखि भगवानकेँ प्रणाम केलखिन। आइक महगीक दौड़मे कोन वस्तुक मूल्य आगू मुहेँ दौग रहल अछि आ कोन पाछू पड़ि रहल अछि, ई तँ बुझए पड़त। ओना, मोटा-मोटी सभ वस्तुक मूल्य -पाइक रूपमे- बढ़ि रहल अछि। तँए अपन उपारजित पूजीकेँ धरगर नै बनाएब तँ चिल्होरिया ऊपरेसँ झपैट लेत। झपैट कि लेत जे अपनो दिल खोलि झपटबऽ चाहै छी। आन गाम जकाँ ने हरिहरपुर अट्ठारह गण्डा पोखैरबला आ ने कोसी-कमलाक भरैन कएल गाम जकाँ, जे एकोटा पोखैर कुम्हरबैयोले नहि। तइ दुनूसँ हटि हरिहरपुरमे तीन भागक पोखैर कमलाक भरैन भऽ गेल आ एक भाग तीनू पोखैर बँचल अछि। ओना, पहिने हरिहरोपुरबलाक विचार रहैन जे गाम चपगर अछि तँए जँ गामक चौथाइ पोखैर खुना जाए तँ गामक मुँह-कान नीक भऽ जाएत। गामक मुँह-कान की? यएह ने जे वासभूमिमे पानिक जमाव नै हुअए, बरसाती मासक तरकारी लेल चौमास हुअए, फल-फलहरीक औसतन उपजैक जमीन होइ, तहिना आरो-आर। मुदा गामक पञ्जी बनबैत-बनबैत एतए आबि अँटैक जाइ छेलैन जे जखन अठारह गण्डा पोखैरे तखन केते रकबाक गाम? तैसंग दोसर प्रश्न उठि जान्हि जे सौंसे गाममे जेते पानिक जरूरत अछि ओतेकेँ पहुँचाएब। मुदा गाममे बेसी मुँहगर-कन्हगर नहि, तँए दसे-बारहटा पोखैर खुनौलैन।

पनरह बर्ख पुड़िते सुपतलाल हरवाहि सीखलक। हरवाहि सीखैक विद्यालय गामे-गाम, बाधे-बाध। जइ हरवाह लग जाउ, स्वेच्छासँ हरवाहि सीखा देता। अपन गाइक बच्चासँ बरद बनौने छल। खेतीक भार सुपतलाल अपना ऊपर लेलक आ कुपतलालकेँ गाइक भार सुमझा देलक। एकर माने ई नै जे काजमे कटा-कटी भेल। हर काजमे जिम्मेदारक खगता होइ छै, तइ हिसाबे। ओना, दुनू काज परिवारेक भेल तँए परिवारक सभ काजपर सभकेँ नजैर रखए पड़त, नै तँ कमी अबैक सम्भावना बढ़ैक शंका रहिते अछि।

हरवाहि सीखते सुपतलालक परिवारमे आमदनीक तीनटा बाट खुजल। पहिल हरवाहिसँ बाहरक आमदनी, बरद आ खेतिहरकेँ संगी बनने खेतीक सम्भावना बढ़िते अछि। तहूमे खेतक मालिक बहरबैया। ओ सभ कि ओहन भठियाह थोड़े छैथ जे एतबो ने बुझता जे बटाइ खेत ओकरे ने देब नीक जेकरा समांगक संग हरो-बरद छइ। ई तँ नै जे कन्याकुमारीसँ कश्मीर आ कश्मीरसँ अरूणाचल धरि सड़क बनाएब आ माटिक काज छिट्टा-पथियासँ होइ! भाय, छिट्टा-पथियाक काज तँ गामे-घरमे तेते अछि जे पार नै लगि रहल अछि आ.., टिटही जकाँ मेघ टेकब! गाम-घरमे अखनो ओहन आँगन-घरक कमी नै अछि, जे आँगनसँ दरबज्जा आ दरबज्जासँ आँगन जाइ-अबैमे नाहक जरूरत पड़ैए। कन्याकुमारीसँ कश्मीर-अरूणाचल तक सड़कक जरूरत अछि, मुदा गाम-घरक बाघक खेतीक जमीन ओहन अछि जे दसो-बीस बीघा जमीन समतल नै अछि जे भारी मशीनक उपयोग हएत।

गाममे दाही भेल। तेहेन दाही भेल जे गामक उपजा-बाड़ी तँ गेबे कएल जे बाधक घासो-पात सड़ि-गलि कऽ पचि गेल। अदहासँ

बेसी गामक गाए-महींस आ बरद मरि गेल। ओना, सुपतलालोक मरल मुदा खुटापर सातटा माल रहने पाँचटा बँचल। अगिलग्गीक पछाइत, भुमकमक पछाइत, रौदी-दाहीक पछाइत जहिना पशुपतिनाथक दर्शन आ अपन बेपार दुनू संगे होइत तहिना बहरबैया खेतबला सभ एक्के-दुइए गाम पहुँचल। सुपतलालकेँ सुतरल। सुतरल ई जे ने स्थायी मनखप लेब आ ने उपजा देब। सालक मनखप लेलौं, समय खराप भऽ गेल, रौदी-दाही भेने अहाँक पूजी - खेत- तँ धोखैर कऽ समुद्रमे नै चलि गेल, मुदा हमर लगता तँ चलि गेल।

..विचारि कऽ सुपतलाल पाँच बीघा जमीन एकटा माशसँ लेलक। अपन खेत, अपना जुतिये उपजाएब जे मन मानत सएह उपजाएब, उपजला पछाइत अनुमानित कण निर्धारित हएत, सबहक अपन-अपन नजैर रहत।

पाँचो बीघा गोरहा खेतमे कमो पानि भेने गामक चारू भागक पानि बोहि कऽ चलि अबैत, जइसँ बाधक जमीनसँ बेसी सुविधा भऽ जाइत। सुपतलालक भाग जागल। मनखप बटाइसँ पहिने सुपतलालकेँ अपन कीनल पाँचे कट्ठा जमीन मुदा ओ पाँचो कट्ठाकेँ बरह-मसिया खेती-जोकर बनौने। बरह-मसिया ई जे तीनू मौसमक तीन फसल उपजैत। ओना, हरि अनन्त हरि कथा जकाँ तर्को-वितर्कक अनन्त उत्तर छइ। ईहो तँ भऽ सकैए जे बरह-मसिया गाछीए लगौल जाए। मुदा प्रश्न तँ ईहो उठैए जे बरह-मसिया ओकरा तँ नै कहबै जे सालमे एकबेर उपजा देत। मुदा तेकरा मानब उचित हएत? उचित तँ यएह ने जे बारहो मास ओइमे श्रम लगौल जाए आ बारहो मास उपज आबए। जँ से नै औत तँ खाली समयमे, जइ समय उत्पादन नै हएत, उपजौनिहार जीवित केना रहत? तेकरो तँ उपयक जरूरत ऐछे। खाएर जे हौउ, सुपतलाल अपन पाँचो कट्ठा जमीनकेँ

धरोहर बुझि उपजाबऽ लगल। मध्यम किसिमक जमीन। पाँचो कट्ठामे तरकारी उपजाबऽ लगल। एतेक उपजा होइ जे अप्पन परिवारक भोजनक अदहाक संग नगदो-नारायण भऽ जाइ।

एक दिन दुनू भाँइ, सुपतलाल-कुपतलाल, घरक काज सम्हारि गाम घुमैक विचार केलक। तेहेन रौदियाह समय जे दस बजेक पछाइत बाधमे लू चलए लगैत। ओ गामो-घर दिस एबे करैत। गाछ सबहक पत्ता झड़ैक-झड़ैक अधसुखू भऽ गेल। सौंसे बाधमे केतौ हरियरीक दरस नहि। टोलसँ निकैलते दुनू भाँइ गामक बाध-बोन देखि सिहैर गेल। आगू बढ़ैक साहस नै भेलइ।

कुपतलाल सुपतलालकेँ कहलक– "भैया, गाम बीरान भऽ गेल। जइ गामक माटि-पानि मरि जाएत तइ गामक गाछ-बिरीछ आकि जीवे-जन्तु केना ठाढ़ रहत?"

कुपतलालक प्रश्न सुनि सुपतलाल बाँहि पकैड़ बाजल–

"बौआ, से केना बुझै छहक?"

सुपतलालक प्रश्नक उत्तर दइले जेना कुपतलालक मन तर-ऊपर करइ, तहिना जेठ भाइक पुछब सुनि कुपतलाल बाजल–

"भैया, जखन खेतमे अन्न आकि आने कोनो उपजा नै हएत तखन लोक केना जीवित रहत? बिना कोयला-पानीसँ तँ लोहा चलबे ने करैए आ मनुक्ख तँ सहजे मनुक्ख छी। लाखो रंगक परसाद पबैबला!"

कुपतलालक ओजाएल जिज्ञासा देखि सुपतलाल बाजल–

"बौआ, अपने दुनू भाँइ छी आ दू दियादिनी आँगनमे छैथ। जहिना चारू गोरेकेँ अपन-अपन जिनगी आ जिनगीक काज अछि तहिना ने सबहक छइ। एककेँ नष्ट भेने तँ पर्यावरण बिगड़ए लगै छै आ जखन एक भागेक सभ किछ नष्ट भऽ जाएत तखन की हेतै?"

"हँ से तँ हेबे...।"

"अपना दुनू भाँइकेँ एतबे ने बुझैक काज छह। जँ अपन काजपर ठाढ़ हेबह तँ अदहा भक्त कमाल जकाँ हेबह, नै जँ बाँकियोहो अदहा पुरा लेबह तँ सोलहन्नी हेबह। जइसँ भेद-अभेद मेटा जाइ छइ।"

"हँ, से तँ ठीके भैया!"

"बौआ सुनह, जे बात हम बुझै छिऐ ओ तोरा कहला पछाइते ने तहूँ बुझबहक, तहिना ने तोरो बात आ घरो लोकक बात सुनला पछाइते ने अपनो बुझब?"

"हँ से तँ ठीके।"

"बौआ, आब तँ सहजे केते दिनसँ खेती करै छी, मुदा जहिया नहियोँ करैत रही तहियेसँ कोसी नहैर सुनै छी जे गामे-गाम बनत, डैमसँ बिजली बनतै आ ऐठामक किसानकेँ करखन्ना जकाँ चौबिसो घन्टा खेतीक काज चलतै।"

"भैया, ई बहुत भेल। छोड़ह ऐगला गप। कान भरैत-भरैत तेना भरि गेल जे काने बन्न भऽ गेल। दिन-राति जे काजे करत आ खा-पी कऽ सुतत नहि, तखन भगवानसँ एकाकार केना हएत?"

"धुर बुड़िबक! अहिना बुझै छीही, जहिना कारखानामे चौबिसो घन्टा काज छै तहिना खेतियोमे अछि। खेतेक उपजासँ चौबिसो घन्टा कारखाना चलैए। जँ पचपन खान चलबैए तँ पैंतालीस खेतो चलबैए।"

कुपतलाल जेना अकैछ गेल। अकछबो केना ने करैत। ने ओते ओकरा समय छै आ ने समेट कऽ रखैक कोठी...।

बाजल– "भैया, जाबे अपन घड़ी-घण्टा बजा अपना मन्दिरमे

पूजा नै करबह ताबे तक तेहेन-तेहेन घड़ी-घण्टाक आवाज सुनैत रहबहक जे अनेरे कानमे तेते झड़ परतह जे काने झड़ा जेतह। काननी कामनी बनि अनेरे औनाए लगबह।”

कुपतलालकेँ अकछाइत देखि सुपतलालक मन खुशी भेल। खुशी ई भेल जे भने समटल मन आ समटल बुधि छै, नै तँ अनेरे भरि दिन तासपर बैस पाइकेँ कागत बना देत। जखने पाइ कागत भेल तखने अन-पानि, गाछ-बिरीछ, सोना-चानी सभटा पाइए बनि जाएत। तखन कोन खगता छै जे खेतसँ धान उपजौल जाए? ओ तँ रस्तो-पेरा भऽ सकै छइ।

गामक ओहन परिवार सुपतलाल-कुपतलालक बनि कऽ ठाढ़ भेल जे ओहन स्थान जकाँ अद्भुत बनि गेल, जैठाम हजारो मन्दिरक बीच गोटे कोनो अद्भुत रहैए! छेहा किसान परिवार। दुनू भाँइ सुपतलालो मानैत जे अनेरे गामक चक्कर-भक्करमे पड़ि नीककेँ अधला किए बनाएब। ने दरबार धरब आ ने दरबारीलाल बनब...।

मुदा तँए कि सुपतलाल गामकेँ छोड़ि देलक? नै छोड़लक, गामक किसान अखनो ठेकनगर किसान बुझि पूसा-ढोली, सबौरक किसान-मेलामे गामक किसानक संग जाइते अछि। सालो भरिक डायरी, खेती-बाड़ी करैक छोट-छोट पुस्तिका, छोट-छोट खेतीक ओजार-पाती अनिते अछि...।

ओना, गौंआँक संग सुपतलाल पुड़िते अछि मुदा गामक माटि, पोखैर, गामक जमीनक किस्म, जमीनक माटि इत्यादि नै भेने मन झुझुआइते रहै छइ। गामक छक्कर-बक्करकेँ ओ धु-बन्हू छागर जकाँ बुझैत अछि। चाहे देवालयमे चढ़ाउ, चाहे भोजनालयमे! दुनू ठाम लेल तैयार। दुनियाँक विपरीत हवामे देखए पड़ैत जे कोनो देशक लोक चरितवान अछि तँ सरकारी महकमा चरितहीन आ केतौ

सरकारी महकमा चरितवान अछि तँ लोक चरितहीन। तँए कि ओहन नै अछि जैठाम दुनू चरितहीनो अछि आ चरितवानो? अछि! जैठाम अछि तैठामक लोक जिनगीक ऊँचाइ छुबि रहल अछि आ जैठाम नै छै, तैठाम धरतीक इर्द-गिर्द कोल्हूक बरद जकाँ घुमि रहल अछि! उपाध्याय आ आचार्यक भेद मेटा गेल अछि! देशक नदीकेँ जोड़ि खेतीक पटौनीक सुविधा बनौल जाए, मुदा लेबड़ाक साए रुपैआ जकाँ किछु ओइमे गेल, किछु तइमे गेल रुपैआ भेल गोल आब एक्केबेर सभ कहियौ 'हरि बोल'।

बिहारक समस्या कहियो नै बुझल गेल जे खाली बिहारेक पनिचलाउ धारकेँ ढंगसँ पूबसँ पच्छिम धरि जोड़ि देल जाए आ समुचित देख-रेख होइ तँ की खेतीक समस्याक समाधानक एक कड़ी हएत की नहि?

समय बीतल। अधउमेरेमे सुपतलाल बीमार पड़ल। एक तँ गाम-घरक जिनगी तैपर इलाजोक नीक सुविधा नहि। आठे दिनक बीमारीक पछाइत सुपतलालक मन कनी-कनी धोखरए लगल। धोखरैत मनमे भेलै जे ऐ काँच माटिक देहक कोनो ठेकान अछि जे कखन फुटि जाएत। कुपतलालकेँ सोर पाड़ि बाजल– "बौआ, हमर कोनो ठेकान नै छह, परिवारक सभ एकठाम बैसह, अपन हिसाब तोरा सभकेँ दइए देबह। अनेरे मरैकाल माथपर एकटा बोझ चढ़ल रहत।"

अखन धरि कुपतलाल सुपतलालक ओहन अज्ञापालक रहल जे जे किछु सुपतलाल कहैत ओतबे बुझैत आ ओतबे करितो रहए। जेठ भाइक प्रति जेना पूर्ण समरपित। ओना, फल अधला कुपतलालकेँ भेल। भेल ई जे कुपतलालकेँ कहियो कोनो काजकेँ परखैक खगता नै भेल। जइसँ सभ काजक लूरि रहितो उजड़लहा-

उपटलहा गामक इतिहास नै बनि सकल। केना बनैत? दुनियाँक इतिहास गढ़निहार व लिखनिहारक मने उचैट गेलैन जे हमरो गाम-घर अही दुनियाँमे अछि।

परिवारक सभ समांग एकठाम भेल। ओना, जइ डरे सुपतलाल भीन भेल सएह हिस्सामे आबि गेलइ। मुदा परिवार तँ परिवार छी जाधैर एक-दोसराक दुख-दर्द, नीक-अधला दोसर नै बुझि अपन बनौत ताधैर परिवारक गाड़ी केना ससरत...।

अबिते पत्नी बजली–

“सभ दिन ओछाइने पकड़ने रहब आकि उठबो करब?”

पत्नीक बात सुनि सुपतलाल किछु ने बाजल। जहिना रणभूमि जाइसँ पहिनहि सिपाही बाटेमे घेरा जाइए तहिना सुपतलालक मन घेरा गेलइ। जिनगीक संगी। जँ गाड़ीक एक पहिया टुटने वा जुता-चप्पलक एक संगी विरहेने केतौ फेका जाइए, तहिना सुपतलालोक मनमे घेरा लगि गेल।

सुपतलालकेँ गुम-सुम देखि कुपतलाल बाजल–

“भैया, राजा-दैवक कोनो ठेकान नै छै, जेते दिन दुनू भाँइ संगे परिवारक गाड़ी जोतलह से जोतलह। जँ तूँ मरबह तँ हमरो मरले बुझियहऽ। लूरि ने हमरा देलह मुदा बुधि तँ तोहीं ने नेने जेबह, तखन खाली टीन ढनढ़नौने कथी हएत?”

सुपतोलालक आ कुपतोलालक बेटा बी.ए.क विद्यार्थी। तीन मासक पछाइत परीक्षा हेतै, स्नातक भऽ जिनगी शुरू करत। अपन आभार व्यक्त करैत सुपतलाल बेटो आ भातिजोक- सुगमलाल आ कुगमलाल- बीच बाजल–

“बाउ, अखन धरिक परिवारक गाड़ी खींचलौं। जँ बीमारीसँ छुट्टी भेटत तैयो नीक, जँ नै भेटत तैयो नीक। जे समय बीतल ओ

अहाँ दुनूक बीच अनुकूलताक समय भेल। जे आगू अछि ओ प्रतिकूलताक भेल। अपनो मन कहैए जे स्नातक बना परिवारकेँ ठाढ़ करी, अपना जनैत करैत एलौं, एतेक तँ जरूर गारंटी देब जे जहियासँ परिवारक गाड़ी कन्हापर उठा घीचलौं, मनुक्ख बनि जे आएल ओकरा मरए नै देलिऐ। मुदा दुनू भाँइकेँ देखि एते तँ मन खनहन ऐछे जे ऐगला गाड़ी खींचनिहार परिवारमे भइये गेल। केते परिवार गाममे अछि जे अहाँ सभ जकाँ कौलेजमे पढ़लक। मुदा अपन विचार, अपन काज अनकापर लादैक नै अछि, देखबैक अछि, कहैक अछि। बस एतबे कहब।"

सुगमलाल बाजल– "बाबू, अहाँ विचारे की होय?"

सुगमलालक प्रश्न सुनि सुपतलाल जिज्ञासाक नजैरसँ कुगमलाल दिस तकलक, ओहो तँ कौलेजेमे पढ़ैए। किछु तँ अपनो बात जोड़त मुदा अदौसँ अबैत परिवारक जेठ-छोटक विचारक संग विचार नै मिलेबाक चलैन रहल। अपन अलग प्रश्नक रूप मानल गेल। मुदा से नै बापेक बेटा कुगमलालक मनमे उठलै, दुनू भाँइ विचारि कऽ करब। तँए कोनो विकार मनमे नहि। सुपतलाल बाजल–

"बौआ, समैयक संग चलैक अछि। बहुत आशासँ दुनू भाँइ तोरे सभले खेत कीनलौं, सम्पैत अरजलौं। जँ एकरा छोड़ि चलि जेबह तँ अनका आड़ि-धुरमे चलि जेबह। बेसी अखन नै कहबह अखन तोरा अपन परीक्षाक तैयारी करैक छह। मुदा एते जरूर कहबह जे तोरे सभ दुआरे अपन खेत बनेलौं, नहि तँ ओही समयमे बँटैत ऐबतौं तँ जम्मे ने होइत। मुदा जे भेल, खेती जे साधनक अभावमे केलौं ओकरा पुरबैत गाइक जे पुरना खाँढ़ अछि ओकरा समायानुकूल बनबैत चलबह तँ किसानक खतियान बना किसानक देश कहेबह, नहि तँ सरकारी खजाना जकाँ तमादी हेतह। सुनि

लएह, खेत ओहन विशाल गाछ पैदा करैक शक्ति रखैए जे जेते ओइमे खाद-पानि देल जाएत ओते विशालसँ विशालतम बनैत जाएत। तँए लक्ष्मण रेखाक बीच रहि जाधैर चलैत रहबह ताधैर लंकाक कोन बात जे लंकापतियो बुते किछु ने बिगाड़ल हएत।”

सुगमलाल–

“तखन?”

“तखन यएह जे समाजेक लत्ती लतरैत अमरलत्ती जकाँ दुनियाँमे लतैर जाइए, मुदा पहिने ओकर जड़ि बिटिया कऽ पकड़बऽ तखने ने?”



तिथि: 01 मई 2014, शब्द संख्या: 2919

अर्जुन रोग

जिनगीक अधडरेरपर पहुँचते सुचित भाइक मनमे ओहन रोगक प्रवेश सहे-सह हुअ लगलैन जेहेन घैलचीक घैल पानिक रस पीबैत-पीबैत रसा जाइए। ओना, बीतल चालीस बर्खक जिनगीमे केते रंगक रोग-सोग, वर-वियाधिसँ गुजैर चुकल छला, जे कहियो दवाइक गोली तँ कहियो इन्जेक्शन तँ कहियो सीरपक उपयोगसँ नीक होइत आएल छला, मुदा ऐ बेरक रोग छुटतैन कि नै छुटतैन से मन कबूले ने कऽ रहल छैन। मुदा तैयो मनकेँ थीर करैत डॉक्टर ऐठाम जेबाक विचार केलैन।

ओना, रोगीक भीड़ डॉक्टर ऐठाम, मुदा सुचित भायकेँ पहुँचते, एक नजैर डॉक्टर साहैब देखि लेलैन। देखिते मनमे हिलकोर उठलैन, कियो पानिक रोग पनिदूदूरसँ सहजे ग्रसित भऽ फुइल जाइए, तँ कियो पाण्डु रोगसँ पीड़ित भऽ पीड़ा जाइए, तँ कियो लोहुक रोगसँ लोहित भऽ जाइए, मुदा सुचित भायमे तइ सबहक कोनो लक्षण डॉक्टर नै देखलखिन।

रोगीक भीड़मे सुचित भाइक नम्बर नवम् रहैन। आठो रोगीकेँ निकलला पछाइत सुचित भाय आगूमे रखल स्टुलपर बैसला। ओजारक जाँच-पड़ताल करैसँ पहिने डॉक्टर साहैब रोगक प्रभावक जाँच शुरू करैत पुछलखिन–

“की सभ होइए?”

‘की सभ होइए’ सुनि सुचित भाय थकमका गेला। थकमकेला

ऐ दुआरे जे अखन जे होइए से कहबैन आकि पहिने जे सभ रोग भेल छल सेहो कहैत कहिऐन। दुविधामे पड़ल सुचित भाइक मुँह बन्न छेलैन। चुप देखि डॉक्टर साहैब ससरैत समय देखि झटैक बजला–

“किए मुँह बन्न केने छी। स्पष्ट बाजू। डॉक्टरसँ रोगक बात छिपौला आ ओकीलसँ घटनाक बात छिपौलासँ नीक परिणामक आशा क्षीण भऽ जाइ छइ। तँए जे होइए खोलि कऽ बाजू।”

डॉक्टर साहैबक झटकार सुनि सुचित भाय बजला–

“ओना, अखन धरि केते बेर बीमारी भेल, मुदा ओइ सभसँ फराक ऐबेर बुझि पड़ैए।”

डॉक्टर–

“जे बुझि पड़ैए सएह ने पुछै छी?”

डॉक्टर साहैबक बात सुनि मनकेँ मोड़ि सुचित भाय बजला–

“कोनो बात विचारए लगै छी आकि बिच्चेमे दोसर आबि ओहिना रस्ता काटि दइए जहिना चौमैतपर लोको, मालो-जाल आ गाड़ियो-सवारी एक दोसरक कटैए।”

अखन धरिक आन रोगीसँ फराक सुचित भाइक जवाब सुनि डॉक्टर साहैब खरियबैत बजला–

“देखू, रोगीक भीड़ अछि, समय निर्धारित अछि तँए जे किछु होइए, निसचित समैयक भीतर बाजू। बहुत प्रक्रिया होइ छै, तइ सभमे सेहो समय लगत। जहियासँ रोगक आक्रमण भेल, तहियासँ बाजू।”

डॉक्टर साहैबक बात सुनि सुचित भाय पैछला बातकेँ छोड़ैत बजला–

“जइ दिनसँ परिवार सुचित रस्ता छोड़ि कुचित रस्ता दिस

बढ़ल आ अपनो मनमे सुचित विचार कुचित दिस बढ़ल तही दिनसँ रोगक आक्रमण भेल।”

सुचित भाइक बात सुनि डॉक्टर साहैब थकमकेला। केना नै थकमकैतैथ, जहिना कोनो धानक खेत आकि कोनो आन अन्नक खेतमे गोटे बागर भऽ आन सभसँ अपन लक्षण फराक देखबए लगैए तहिना आन रोगीसँ फराक सुचित भाय बुझि पड़लैन। मुदा, डॉक्टर साहैब ने बिगड़ला आ ने अधीर भेला, असथिरसँ पुछलखिन–

“परिवारमे की भेल आ अपने की भेल, दुनू फुटा-फुटा बाजू। पहिने परिवारक बाजू।”

पहिने परिवारक पुछैक कारण भेलैन जे परिवार बेकतीक समूह छी आ परिवारेक समूह ने टोलो-गाम छी। तँए सोलहन्नी परिवारे भेल।

परिवार सुनि सुचित भाय थकमकेला। थकमकेला ई जे परिवारमे दू-दिसिया मुहोँ आ मुड़ियो होइ छइ। एकटा होइ छै ऊपरसँ बाबा-परबाबा आ दोसर होइ छै पोता-परपोतासँ। केमहरसँ बाजी? एक दिस कलुसैत क्रममे चलि रहल अछि आ दोसर कलशैक क्रममे। मेड़ बनि परिवार मेड़ियाएल अछि। परिवारक भीतर भाव-अभाव तँ ऐछे, तखन..?

मुदा जहिना पेटक आँत मोड़ाएल रहै छै, तहिना मोड़ि बजला–

“परिवारमे भैयारीक बीच फटेदारी हिस्सा-बखराक रोग जोर पकैड़ लेलक, जइसँ जेना चलैक जाँघे-घुट्टीक जोड़ जकड़ा गेल, तहिना भऽ गेल अछि। केना आगू ससरत?”

सुचित भाइक बात सुनि डॉक्टर साहैब आनक ओझरी बुझि पल्ला झाड़ैत, अपनाकेँ छिपबैत– छिपबैक कारण भेलैन डॉक्टर तँ

अपने छी, अपनो परिवारेमे रहै छी, केना परिवारक ओझरीकेँ आन लग बाजब जे नै बुझै छी आकि नै बुझल अछि। बजला–

“देखू, हम देहक रोगक डॉक्टर छी तँए देहक दर्द बाजू, देहीक नहि।”

डॉक्टर साहैबक पल्ला झाड़ब सुचित भाय नै बुझि पेला, बातपर सोलहन्नी बिसवास करैत बजला–

“डॉक्टर साहैब, सदिकाल मन चिड़ै-टिकुली जकाँ उड़ैत रहैए!”

डॉक्टर साहैब–

“मन तँ ओहिना चञ्चल अछि। तहूमे जखन चुल्हिपर खापैड़मे पड़त, तखन जँ तीसी जकाँ नै चनचनाएत तहन ओकर रसे की भेल। ओहो तँ सिनेह सँ सनाएले अछि...।”

डॉक्टर साहैबकेँ भँसैत देखि सुचित भाय बिच्चेमे बजला–

“दोसर बात कहए चाहै छी डॉक्टर साहैब?”

सुचित भाइक बोनाएल बात-दे सुनि डॉक्टर साहैब कहलखिन–

“बाजू।”

सह पाबि सुचित भाय बजला–

“डॉक्टर साहैब, बजैक ठेकान नै रहैए। कखनो किछु बजै छी आ कखनो किछु बजा जाइए। एक्के बातकेँ भरि दिनमे गिरगिट जकाँ कहियौ आकि पेरिसक सड़क जकाँ, क्षणे-क्षण छिनछिनाइत क्षणेमे छीन-अछीन भऽ जाइए!”

बिनु भीड़-भाड़बला चौमैतपर जहिना गाड़ी-सवारीक ड्राइवर जल्दीवाजीमे निकलए चाहैए तहिना निकैल डॉक्टर साहैब

कहलखिन–

"ठीक अछि, आगू बरहू।"

डॉक्टर साहैबक शतरंजक सह पबिते सुचित भाय बिनु देरी केने बजला–

"क्षणे-क्षण जहिना बोली बदलैए तहिना क्षणे-क्षण तामसो दिन-रातिक आँखि मिचौनी जकाँ उठैत-बैसैत रहैए!"

जहिना गड़ूरकेँ भुजंग छन्द-शास्त्र भुजियबए लगल आ गड़ूर आँखि मुनि अङ्गेजए लगल तहिना डॉक्टर साहैब, सुचित भाइक बातकेँ अङ्गेजैत बजला–

"ठीक बात, ठीक बात, आगू बरहू।"

मुस्की दैत सुचित भाय आगू बजला–

"डॉक्टर साहैब की कहब मनक मैल आ की कहब बोलीक बाइन, आकि कहब तमाएल प्रीत-रीत, सदिकाल जी भरछैत रहैए। बुझिये ने पबै छिऐ जे खटगर दही सानल चूड़ामे आमक अँचारक केहेन रस अबै छै!"

आमक अँचार सुनिते डॉक्टर साहैबकेँ रौतका खेलहा अँचार मोन पड़लैन। जीहसँ ठोर पोछैत बजला– "बड़ बेस, बड़ बेस। आगू बरहू।"

डॉक्टर साहैबक हाव-भाव देखि सुचित भाइक मन आरो गदगदेलैन। गदगदाइत बजला– "डॉक्टर साहैब, जहियासँ रोगक उपैत भेल, तहियासँ पेटमे खौंत फेकैत रहैए!"

'खौंत' शब्दकेँ अनठिया बुझि डॉक्टर साहैब बिच्चेमे टोकलखिन–

"की खौंत?"

सुचित भाय– “जेना बुझि पड़ैए जे पेटमे लहास उठैए। सदिकाल होइए जे जेना आगि पजरले रहैए!”

आगि सुनि डॉक्टर साहैब पुछलखिन–

“तइसँ की सभ होइए?”

“डॉक्टर साहैब यएह तँ असल रोग छी, आँखि चोन्हियाइत रहैए, दुनियाँमे भाए-बहिन केतौ देखबे ने करै छी, सभठाम वेश्ये-भरूआ देखै छी। केना रोग बदलत?”

सुचित भाइक प्रश्न सुनि डॉक्टर साहैब अपन पाशा बदलैत बजला– “जखन हमहूँ कौलेजमे पढ़ैत रही तखन अहिना भऽ गेल रहए।”

“केना छूटल?”

“पहाड़पर पहाड़ी बाबा छैथ, हुनके लग गेलौं ओ कहलैन जे ‘अर्जुन रोग’ भऽ गेल अछि। अखन महाभारत उनटबैक समय नै अछि। वएह कृष्णोषधिक एकटा जड़ी देलैन। सात दिन पीसि-पीसि पीलौं। साते दिन महिना, साल बुझि पड़ल। नीक भऽ गेलौं। अहूँ ओत्तै चलि जाउ। मधुसूदन धरमशालामे जनारदन रहै छैथ। ओतइ रहि दवाइ पीब, साते दिनमे नीक भऽ कऽ घूमब।”



तिथि: 7 मई 2014, शब्द संख्या: 1003

नैहराक धाड़

चिन्तासँ चिताएल चित्त देखि लाल काकीकेँ स्नातक पूर्वाद्धक छात्र-सोहन पुछलकैन–

"लाल काकी, मन किए पीड़ौंछ बुझि पड़ैए?"

भावातीतमे डुमल लाल काकी आरो डुमकी लगबै दुआरे बहाना बनबैत बजली–

"बच्चा, कनी-मनी नोनगर-अनोन तीमन-तरकारी भेने कियो खाएब थोड़े छोड़ैए, तेहने जकाँ भऽ गेल अछि, और नै किछु।"

लाल काकीक बहटारैत उत्तर सुनि सोहन गप करबकेँ तत्काल कम गुणगर बुझि ओतएसँ विदा भऽ गेल। सोचलक, कौलेजसँ एला पछाइत साँझू पहर काकीसँ खरिआइर कऽ पुइछ बुझि लेब।

अट्ठारह बर्खक अवस्थामे लाल काकी कर्णपुरसँ दुरागमन भऽ सोहनपुर आएल छेली। आइसँ चालीस बर्ख पूर्व। सम्पन्न परिवार। सम्पन्न परिवारक अर्थ ई नै जे चौघारा कोठा छेलैन, दुआरपर हाथी आ बखारी छेलैन। सम्पन्नताक अर्थ ई जे जहिना नैहरक पाँच बीघा खेतबला परिवार, दुआरपर जोड़ भरि बरद, दूटा महींस, दस कट्ठाक घराड़ी, जइमे चौघारा खपड़ाक दुआरो आ अँगनोक घर, कट्ठा भरि अगिवास, पान-सात कट्ठाक चौमासक संग घराड़ी जुटल तहिना। ओना, गुनियाँ-परकाल आकि फीता-कड़ीसँ तँ सासुरक घराड़ी नै नापल छेलैन मुदा देखैमे एकरंगाहे बुझि पड़ितए।

समय बीतल। जहिना कोनो परिवारमे सभ कथुक बिलेबाक ढबाहि लगि जाइत तहिना लाल काकीक परिवारमे ढबाहि लगि

गेलैन। दियाद-बादसँ हक-हिस्साक तेहेन ओझरी लाल काकाकेँ फँसलैन जे दियादीएसँ लछमी पड़ा गेलखिन। सभ अपन सभ किछु बेचि ओकील-मुंशी, कचहरी, होटल, सवारीक भाड़ा इत्यादिमे फूकि देलैन, भविसक आशा चरमरा गेलैन। पाइक दुआरे लाल काकाकेँ लाल काकी बीमारीक इलाज नै करा सकली। काकाकेँ भगवानक हाथे उसरैग देलखिन। परिवारमे बिलैनीक ढबाहि लगने एक्के उसरनमे काकीक पतियो आ दुनू बच्चो उसैर गेलैन।

तीस बर्खसँ काकी किसकारक मासमे नैहर जाइ छैथ आ चारि मास रहि, भाए-भौजाइकेँ खेती-बाड़ी सम्हारि दइ छथिन। भाइयो-भौजाइ ई सोचि जे एक पेटक रकबे केते, तेना उचित-उपकार करैत रहलैन जे साल-माल लगि जाइ छैन। चारि मास नैहरे बीतै छैन बाँकी आठ मास भेल, तहूमे रवि, मंगलवारीसँ लऽ कऽ रामनमी, कृष्णामुट्ठीक उपास धरि, करीब चालीस दिन अपना हिस्सामे बाँटि लइ छैन। लालो काकी भरि दिन उपास करै छैथ आ साँझू पहरमे दुनू हाथ उठा विसरजन करै छैथ।

ओना, लाल काकीक मनमे ओहन विचार बिच्चोमे हुमैड़ जाइत रहैन मुदा मनक ताप संताप बनि आगि जकाँ उठैन मुदा सासुरक सीमा मानि नैहर बितबैत रहली। मुदा चौथापनक सीमापर पहुँचैत-पहुँचैत आइ लाल काकीक मन धधैक-धधैक मनमे उधैक रहल छैन...। चिन्तामे डुमल लाल काकीकेँ देखि सोहन कौलेज दिस बढ़ि गेल। दोसर साँझ, मरियाएल अन्हार पसैर रहल छल, दिनक इजोत अपन समझौताक सीमापर आबि रहल छल। अबैत घटबी देखि इजोतो पनचैती मानैले तैयार भेल। ..लाल काकी लग पहुँच सोहन बाजल–

“लालकाकी, तखन कौलेज जाइ छेलौं तँए दोहरा कऽ किछु

ने पुछलौं, मुदा मन नै मानलक तँए दोहरा कऽ पुछए एलौं।”

सोहनक बात सुनि लाल काकी अग-दीगमे पड़ि गेली। अग-दीग ई जे गाममे के केकर सुनलक, जँ सुनबे केलक तँ केलक की? किछु ने! तखन अपन मनक बेथा बजबे किए करब...।

लाल काकीक मनमे तेना हुअ लगलैन जे ने बाजब नीक बुझैथ आ ने नै बाजब। मनमे हुमड़ैत रहैन अपन तीस बर्खक जिनगी। केना समाजक बीच तीस बर्खसँ झूठ बजैत एलौं। झूठ ई जे लाल काकी नैहर जा भाए-भौजाइक काज सम्हारै छेली, जइसँ खेबो करै छेली आ सासुर अबैकाल भाए अपन कमाइल बोइनक संग अन्नक अगोओ फुटा दइ छेलैन। जेते माथपर उठा आनल होइ छेलैन तेते सासुर अनै छेली, बाँकी नैहरेमे रहै छेलैन। सठला पछाइत फेर लऽ अबै छेली। ओही कमाइक माने नैहराक काजक विचार मनकेँ हौंर रहल छेलैन। माए-बापक ऐठाम सभ कन्या-जाति सभ काज करैए मुदा सासुरमे ओही काजसँ वर्जित भऽ जाइए। यएह विचार लाल काकीक मनकेँ ममोड़ि रहल छेलैन...।

अपन प्रश्न दोहरबैत सोहन बाजल–

“लालकाकी, हम तँ बाल-बोध छी अखन धरि स्कूल-कौलेज छोड़ि ने किछु देखलौं आ ने किछु केलौं अछि, मुदा अहाँ तँ करीब साठि बर्खक भऽ गेल छी, साठि बर्खक जिनगीक तीत-मीठसँ परिचित छी तँए पुछि रहल छी।”

अपन जिनगीक बेथा-कथा सुनिनिहार पाबि लालकाकी बजली–

“बौआ, गिरहतक बेटी छी, गिरहस्तीक काजक सभ लूरि सीखने छी, मुदा एक तँ समैयक फेरी जे पतियो आ सन्तानोसँ बिछुड़लौं, तैसंग परिवारक बान्ह एहेन छान-वान लगा देलक जे या तँ भीख मांगी वा गाम छोड़ि चलि जाइ।”

लाल काकीक बात सोहन नीक जकाँ नै बुझि पौलक, मुदा एते आभास तँ भइये गेलै जे ओहन परिवारक मनुक्खकेँ जेकरा सभ किछु रहितो भीख मंगैक परिस्थिति पैदा कएल जाइए। मुदा कोनो निर्णय तक पहुँचैसँ पहिने ओकर तड़ी-घटी बुझब जरूरी अछि। जँ से नै बुझब तँ खड़हाएल बीरार जकाँ बीआ उखड़ल आकि घास, से बेराएब कठिन भऽ जाएत। लाल काकीकेँ तत्-मत् करैत देख, अपन मनक सभ बात घोंटैत सोहन बाजल–

"लालकाकी, तेना बजलिऐ जे नै बुझलौं। कनी सुतिया कऽ कहियौ?"

सोहनक जिज्ञासा सुनि हृदए खोलि लाल काकी बजली–

"बौआ, तीस बर्खसँ गाम छोड़ि, नैहर जा खटै छेलौं, जे कमाइ छेलौं तइसँ गुजर करैत एलौं।"

लाल काकीक बातक बिच्चेमे सोहन अपन विचार रखलक–

"ई तँ नीक काज भेल, जे भीख नै मांगि कमा कऽ पेट चलेलौं!"

जइ भावमे सोहन बाजल तइसँ भिन्न काकीक भाव जगि गेलैन। बजली–

"बौआ, नैहरक बोइनकेँ भाए-भौजाइक मदैत कहि झूठ बजैत एलौं, कमाइकेँ भाए-भौजाइक देल उपस्कर कहैत एलौं। मुदा आइ मन धिक्कारि रहल अछि जे झूठ किए बजलौं!"

लाल काकीक विचार सुनि सोहन अपनाकेँ ओइ विचारकेँ बुझै जोग नै बुझि अक्षम पौलक। मुदा अपन जिज्ञासा रखैत पुछलक–

"काकी, नीक जकाँ नै बुझि रहल छी?"

लाल काकी बजली– "बौआ, जइ परिवारमे छी तइ परिवारमे

नारी जातिक हाथक काज छीनि लेल गेल अछि। जँ कियो करौ चाहत तँ जिनगीक बात हल्लुक बनि जाइ छै आ कुटी-चालिक बात पसैर जाइ छइ।”

ओना, सोहन लाल काकीक मनक बात नीक जकाँ नै बुझि पाएल, मुदा विचारक रस पाबि मुड़ी डोलबैत बाजल–

“हँ, से तँ ऐछे!”



तिथि: 14 मई 2014, शब्द संख्या: 885

अवाक

दुनियाँक एक-एक मनुक्खकेँ जहिना अपन देश-कोस आ अपन भूमि-मातृभूमिक प्रति ममता सिनेह रहै छै तहिना हमरो जगल। कोनो अधला वृत्ति तँ छीहो नहियेँ जे बेसी तर्क-वितर्क आकि विचार-विमर्श करैक परियोजन पड़ितए।

देह-दशासँ दुब्बर रहितो अपन मातृभूमिक गरिमा बढ़बैले समाजसँ अनुचित विचारो आ काजो मेटबैक संकल्प मनमे रोपलौं। अनुचितक विरोधमे बाजब शुरू केलौं, मुदा बाजबे धरि रहलौं। जइसँ कोनो भीड़-भड़क्कासँ कहियो भेँट नै भेल। मनो आ मनक विचारो तइसँ कनी-मनी सकता गेल। मन सकताइते अनुचित काज रोकैक उत्साह जगल। उत्साहक दोसरो कारण भेल, ओ भेल जे हमरा सन-सन बहुत गोरे हमरे संग संकल्प मनमे रोपलक जइसँ एक तरहक विचारक जनम भेल। जहिना आमक आँठीमे पीपही जनैमते दू दलिया बनि आँठीक गुद्दा रगड़ पाबि पीपहीक आवाज दिअ लगै छै तहिना मन पिपिऐ लगल।

गाममे एकटा घटना भेल। घटना कि भेल जे रामलालक बकरी चोरि भऽ गेल। ओना, मालो-जाल आ बकरियो-छकरीक चोरियो होइए आ अपनो डोरी टुटने वा खुजने सेहो खुट्टा छोड़ि हटि जाइए। खुट्टा सून देखने ताक-हेर मलकार करिते अछि। मुदा होइ दुनू छइ। चोरियो होइ छै आ खुजबो करै छइ। खुजलाहा भेट जाइ छै मुदा चोरौलहा चल जाइ छइ।

भोर होइते रामलाल बकरी टोहियबऽ लगल। परिवारक सभ तूर बाड़ी-झाड़ी, अड़ोसी-पड़ोसीक घर आ खेत-खरिहाँनमे ताकए लगल। सौंसे गाम बकरी चोरिक गन्ध पसैर गेल। जेतए-तेतए माने चौक-चौराहासँ लऽ कऽ दुआर-दरबज्जा, इनार-पोखरिक घाट धरिमे एक्के चर्च जे ‘रामलालक बकरी चोरि भऽ गेल।’

तही बीच दोसरो गन्ध निकलल। ओ निकलल जे किछु रतिगर दबि कऽ गरम-मसालाक गन्ध पसरल छल। भरिसक केतौ मौस रनहाइए! एती रातिमे! मुदा भाइयो तँ सकिते छै जे कियो दरभंगा-मधुबनीसँ राति दबा मौस-तौंस अनने हेता। पोखरिक पानिक हिलकोर जकाँ गामोमे हिलकोर उठल, मुदा केतौ असथिर तँ केतौ तेज गति आएल। रौतका मौसक सुगन्ध मुदा बकरी चोरिक भाँज खोललक। भाँज खुजिते चोर-मोट धड़ा गेल।

समाज तँ समाज छिऐ, ऐठाम तँ गोली-बन्दूकक ओगरवाहि नै छै, ऐठाम तँ समाजक दसटा लोके अपन उचित-अनुचितक विचार करता। ई तँ नै जे फल्लाँ-गाम चोरक छी आ चिल्लाँ-गाम नीक लोकक। गाममे नीको लोक अछि आ चोरो अछि। सतो बजनिहार अछि झूठो बजनिहार तँ ऐछे, इमानदारो अछि आ बेइमानो अछि तहिना सूदिखोरो अछि आ सूदि देनिहारो तँ ऐछे। मुदा गाम-समाज तँ ओहन जगहक इजोत छी जैठाम ऐनाक जरूरते ने छै, हाथक कंग भूमि जकाँ।

बकरी चोरौनिहार अपन पूर्व संस्कारक परिचय दैत ताल ठोकि अपन पैघ-पैघ वृत्तिक चर्च बखाइन देलक। वातावरण एहेन भऽ गेल जे बकरियेक तराजूपर गाम तौलाइक परिस्थिति बनि गेल। पनचैतीक समय बनल।

पनचैतीमे समाजक एते लोकक जुटान भरिसक कोनो

पनचैतीमे कहियो नै भेल छल। कोनो काजक एकमुहरी विचार काजकेँ हल्लुक बनबै छै, से नै भेल। विचारधाराक धारमे चोरि फँसि गेल। गाम दू फाँक भऽ गेल! मारि-पीट भऽ गेल! मारि-पीट भेने मोकदमाक आगमन भेल। लोअर प्राइमरीक चटिया जकाँ काँखमे झोरा टाँगि मधुबनी कचहरीक स्कूलमे पचीस-तीस गोरे नाओं लिखौलक।

बीस बर्खक पछाइत जखन मोकदमा मरान दिस बढ़ल तइ समय एकटा अनुकूलतो भेल। भेल ई जे केसक संख्या बेसी भेने केसेक समय निर्धारित भेल जे 'अमुक केस जँ दस बर्खसँ न्यायालयमे अछि तँ ओकरा खारिज कएल जाए।'

मनुक्खे जकाँ मरानपर बेसी तरद्दूतक जरूरी होइते छै, बीमारीसँ सराध धरि। जेते गोरे मोकदमाक मुद्दालह रही अपनामे विचार केलौं जे बीस बर्खसँ गाम-सँ-मधुबनी आ मधुबनी-सँ-गाम रेङ्बे केलौं, समाज होइक नाते कम तँ नहियेँ भेल। तँए जेकर बकरी चोरि भेल ओकरो खर्चमे मदैत करैले एकबेर कहियौ। संयोग एहेन जे एकतरफा केस भेल रहै तँए बकरीबला नै फँसल छल। जहिना पहिने अबाद छल तहिना घटनाक पछाइतो रहल। बिनु पानिक मनुक्ख पीछड़ाह तँ होइते अछि। रामलालो ओहने पीछड़ाह। जेते जगह, जेते लोक, तेते रंगक चालि आ तेते रंगक बोल तँ सभ दिनका रहबे करए, आरो बेसी चलती आबि गेलइ। चलतीक कारण दू-दिसिया भेल। दू-दिसिया ई जे जेकर बकरी नै रहै तेकरे मधुबनीक दौड़ो-बरहा, होटलोक खर्च आ गाड़ियो भाड़ासँ लऽ कऽ समय तकक खर्च हुअ लगलै। जइसँ मनमे दिल्लीक लड्डू जकाँ हेबे करै जे जेहने खेने तेहने बिनु खेने। तँए अपन नोकसानीपर सोच-अपसोच हेबे करइ। मनमे बोझ सेहो बनियेँ गेल रहइ। बोझ बनैक कारण ईहो भेल जे जँ बकरीबला कमसँ कम पीठपोहुओ रहैत तँ किछु असो

रहितए, मुदा सेहो नहि! गाममे सभठाम बैसै-उठैक चलतियो बेसी ओकरे भऽ गेल अछि। तैसंग दोसरो कारण भेल, ओ ई भेल जे एहेन लोकक ठेकाने कोन? हो-न-हो कहीं गोटे विरोधी एहेन संग देनिहार भऽ गेल जे अपने पूजी लगा तमाशा ने ठाढ़ कऽ दिअए। तमाशा ई जे कोट-कचहरीक कारोबार सेहो ठिकौतीएपर चलए लगल अछि। सभ काजक ठिकौती! एते तक कि जजमेंटो ठिकौतीए होइए। तँए शंका हएब सोभाविके। भरि दिन आँखियो आ कानो, देखो कऽ आ सुनियोँ कऽ तोपाएले रहैए जे फल्लाँ पोखैरमे माछक जोती भेल अछि, केदैन दबाइ रातिमे धऽ देलकै। कियो देखलकै कहाँ! तहिना फल्लाँ गाछमे आम तोड़ि लेलकै, फल्लाँक सजमनिक लत्तीए काटि देलकै जे विकसित खेतीक प्रक्रियाक अंग छी, अंग ई जे जइ खेतमे अन्नक खेती होइए ओइमे जँ तरकारी खेती हुअए तँ अन्नसँ चारि गुणा उपज जरूर बढ़त! गामक उत्पादन- उपजा-बाड़ी- गामकेँ आगू आ पाछू घुसकैक मिथिलाक चिन्तनधाराक प्रमुख थर्मामीटर छी। जे धरती अन्न, फल, फूल, भोजन, जीवनकेँ एक सूत्रमे बान्हि देव तुल्य जिनगीक अनुसन्धान कऽ चुकल अछि!

पाँच गोरे जे सभ केसक मुद्दालह रही, रामलाल ऐठाम गेलौं। रामलालक चलती खाली भाषणेटा मे नै खेत-बोनिहारसँ छोटका वेपारी बनि गेल। गामो आ गामक चारू भाग छोटका-बड़का हाट लगिते छइ। एम्हुरका ओमहर लऽ जा बेचि लइए आ ओमहर जे सस्ता रहै छै ओ कीनि लइए। साइकिल रखने अछि एक मनक बोझाक कारोबारी बनि गेल अछि। पहुँचते देखलिऐ जे करीब प्रतिदिन तीन साए लाभक कारोबार करैए। तँए मुँहक मुस्की दैत कहलिऐ–

“रामलाल, गाममे केकरो चलती आएल तँ तोरा सभसँ बेसी एलह, एकेटा बकरी गेने जिनगी बदैल गेलह।”

जहिना हमर मुस्की रहए तइसँ डेढ़िया-दोबर मुस्कान भरैत रामलाल बाजल–

“चलती तँ सौंसे गामेकेँ एलै आकि हमरेटा आएल। हमरे पाबि केते लोक मधुबनी देखलक। नै तँ, बाप-दादा देखबे ने केलकै आ बेटा-पोता ओकील जकाँ कानून झाड़ैए!”

ओही दिन मुस्की आ मुस्कानकेँ देखलौं। रामलालक मुस्कान अपन जिनगीक लाली परहक, मुदा ओ लालीक जड़ि की? से के देखत जेकरा ले चोरि करी सएह कहए चोरा!

कहलिऐ– “रामलाल, तोहरबला केस आब मरानपर आबि गेल अछि। बीस बर्खसँ तँ केसमे फँसल सोल्हो गोरे मधुबनी रेङ्गबे केलौं आ खरचो केलौं। अन्तिम तोर केसक छी, विधि-बेवहारमे खर्च होइते छै, किछु उचितो किछु अनुचितो। तँए ऐगला खर्च तूँ दऽ दहक।”

मुस्कान भरल मुहसँ रामलाल बाजल– “हमहीं तोरा सभकेँ पनचैतीमे मारि करए कहने रहियऽ जे केसक खर्चा मंगै छह?”

रामलालक गप सुनि अवाक भऽ गेलौं।

ओना, मरैसँ पहिने लोक अङ्गेज नेने रहैए जे मुइलोपर अस्सी मनक भार पड़बे करत तइले चिन्ता केने चीता मानत। जे बीस बर्ख लड़ल ओकरा बुते फरिछौल नै हेतइ। मुदा..?



तिथि: 17 मई 2014, शब्द संख्या: 1047

पोखरिक सैरात

मार्च मासक तेसर सप्ताह। अनुमण्डल कार्यालयक ऑफिस जा गामक पोखरिक सैरातक सम्बन्धमे रमानन्द आवेदन दैत बाजल– “एते दिन जइ ढंगे भेल, भेल। मुदा आगूक बिनु विचार केने नै होइ?”

एक तँ ओहिना सरकारियो कार्यालय आ बैंको अदहा मार्चक पछाइत बेसी व्यस्त भइये जाइए। व्यस्ततो केना नै हएत, सरकारी मासक आखिरी मास छी, साल भरिक काजक लेखो-जोखा होइए आ ऐगला सालक काजोमे हाथ लगबे करैए। ऑफिसक भीड़ दुआरे आलमारीमे आवेदन रखि, ऑफिससँ आश्वासन भेटल– “देखल जेतइ।”

ऑफिससँ निकैल रमानन्द अपन संगी सबहक संग आगूक परतीपर बैस विचार-विमर्श करैक बैसार केलक। ओना, मार्च रहने गामो-गामक आ सरकारियो काजसँ जुड़ल लोकक भीड़ रहबे करइ। बैसार केकरो हौइ मुदा सार्वजनिक जगहक तँ अपन महत छै, तैसंग ईहो छै जे केकरो बजैक आकि सुनैक अधिकार तँ भइये जाइ छइ। आनक ओइ बैसारमे, सभकेँ सुनै आकि बजैक अधिकार नै होइ छै जे तरपेसकी रहल। मुदा ई तँ सार्वजनिक जगहक बैसार छी तँए सभकेँ अधिकार छइ। ओना, गामसँ रमानन्द पाँचे गोरे, पाँचो शिक्षित बेरोजगार विचारि कऽ पोखरिक सैरातक विरोध करैले पहुँचल छल मुदा एक्के-दुइए आनो-आन ब्लौकक आ आनो-आन

गामक एक-डेढ़ साए लोक बैसारमे बैस गेल।

अदौसँ मिथिलांचलमे पोखैर-इनार जनमैत रहल आ कोसी, कमलाक बाढ़िक कटनियाँमे मरितो रहले अछि। शुरूहेसँ लोकक बीच ई धारना बनले अछि जे पोखैर-इनार धर्मकृत भेने दसनामा होइ छइ। भलेँ बेकतीगते किए ने होइ, मुदा तइमे बेवधानो कम नै भेल। पोखैर-इनार धर्मकृत होइतो अधर्मक रूपमे उपयोग सेहो होइते आएल अछि। अधर्म ई जे मुँह-दुब्बर सभकेँ पानिक उपयोगसँ रोकल गेल। मुदा मनुक्खो तँ मनुक्ख छी। कठजीव तँ होइते अछि। केतबो छीना-झपटी हौउ आकि महामारी, तैयो मरलो-हरला पछाइत पोनैगिये जाइए। दुनियाँ रहत तँ मनुक्खो रहबे करत आ मनुक्ख रहत तँ देवा-देवीसँ भूतो-प्रेत रहबे करत।

पैछला सात दिनसँ, जहियासँ सैरातक सूचना भेल, गहमा-गहमी हुअ लगल। अनुमण्डलक जेते पोखैर अछि ओकर बन्दोवस्ती हएत। ओना, सभ पोखैर सार्वजनिक नहियेँ अछि मुदा किछु तँ ऐछे। तेकर कारण अछि जे जमीन्दारी टुटला पछाइत जे पोखैर नीलाम भेल सेहो आ जे जमीन्दारक माध्यमसँ वा राजक आदेशसँ खुनौल गेल सेहो, सोलहन्नी तँ नहियेँ मुदा अदहा-छिदहा तँ सरकारी सैरात भेबे कएल। तँए अनुमण्डलक सभ पोखरिक बन्दोबस्त नहियेँ होइ छल मुदा जे सरकारी अधिकारमे अछि ओ तँ होइते आबि रहल अछि। एक तँ ओहुना रौदी-दाहीक प्रभाव पोखैर-इनारमे बेसी होइते अछि, तँए बिसवासू उपजा होइ से तँ नहियेँ छल मुदा तैयो थोड़-थाड़ तँ ऐछे।

जखन पोखरिक दुरबेवहार हुअ लगल तखन आम-जनक बीच आक्रोश बढ़ल, जइसँ गामे-गाम विवाद ठाढ़ भेल, जेकर परिणाम भेल जे किछु विवादित पोखैर सरकारी भेल। ओना, गाम-

गामक सभ पोखैर सरकारी नहियेँ भेल मुदा पोखैरबला जे दुरबेवहार करै छल से कमल। कमल ई जे अकसरहाँ परिवार अपन पानिक ओरियान कल गड़ा कऽ लेलक। मुदा समस्या तैयो रहबे कएल। जखन कि चारि-सँ-आठअना परिवारमे पानिक ओरियान अपनो कल गड़ौने आ किछु सरकारियो माध्यमसँ भेल तथापि समस्या तँ ऐछे।

ओना, अनुमण्डलक अदहासँ बेसी गामक पोखैर मरने भऽ गेल। मरना ई भेल जे जहिना कोसीक तहिना कमला धारक कटनियासँ भोथाएल। गामसँ पोखैर हेरा गेल। पोखैरे नहि, इनारो हेरा गेल। ओना, इनार हराइक दोसरो कारण भेल। भेल ई जे इनारसँ पानि तँ दुनू हाथे खींच कऽ ऊपर अनैए पड़ै छै जइमे बेसी भीड़ो होइ छै आ डोल-उगहैनक खगता सेहो पड़ै छै, जेकरा कलक हेण्डिल असान बना देलक। मुदा पानि ऊपर अनैमे जहिना असान भेल तहिना कुम्हारक रोजगार सेहो खेलक। ओना, कुम्हारो सभ घैलक बदला डाबा-डुबी बनैबते अछि। नै बनौत तँ जुड़शीतलमे दान कथी लोक करत। अशुद्ध प्लास्टिकक बाल्टी करत केना, आ स्टीलक महगे छइ। ताम-पीत्तैरक जे करत से ओ आब गाममे अछि आकि पड़ा कऽ बजार चलि गेल।

गाम-गाममे कोसी-कमलाक बाउलक भरैन भेने पोखैर-इनार गेल। तेतबे नहि! ओना, पोखरिक बदला धार आएल, मुदा गामक माटि तोपेने, उपजाउ भूमि बाउलसँ भरने, गामक सेखीए बदैल देलक। सोलहन्नी तँ नै कहल जा सकैए मुदा चौअन्नी, अठन्नी केतौ-केतौ सोलहन्नियोँ अन-पानि विहीन गाम भऽ गेल। एक गामक कोन बात जे धारक पेटमे पड़ि हजारो गाम बाउल-पानिक तरमे दबा गेल।

उपजाक माटि बलुआएल, पानिक पोखैर-इनार गेल आ

गाछी-बिरछी, खढ़-खरहोरि सेहो सभ चलि गेल। मुदा जाइक माने ई नै जे उड़ि कऽ मेघमे चलि गेल आकि समुद्रमे डुमि गेल, से नै भेल। जहिना दिन घटलापर मुँह-दुबरा बहु मुँह-गरहाक भौजाइ बनि घरसँ पड़ा जाइ छै तहिना मिथिलांचलक किछु माटियोक संग भेल। तैसंग गाम-गाममे रहनिहारक जमीन आ बहरबैया जमीनबलाक बीच हिस्सा–बखराक झंझट सेहो लधाइत रहल। सिकमी, बकास्त, मनखप इत्यादि ढेर रंगक ओझरी गाममे पसरल। पसरबो केना नै करैत एकठाम जँ दू बीघा जमीनक अड़ियाएल टुकड़ी अछि, तँ ओइमे एक बीघाक टुकड़ीक मालगुजारी बीस रुपैआ अछि तहीठाम दोसर टुकड़ी- शिवोत्तर, ब्रह्मोत्तर इत्यादि- मालगुजारी विहीन अछि। माने ओकरा चारि-आठअना रसीदक छपाइ भरि मात्र लगै छइ। जेकरा शेष कहल जाइ छइ।

गामक माटिक ओझरी बढ़ैत-बढ़ैत पानियोँ दिस बढ़ल। धार-धुरक घटवारि बढ़ल, मुदा एके धारक घटवारि एक रंग नै रहल। खुशीक बात ईहो रहल जे धार-धुरक घटवारि बहरबैयाकेँ सेहो हाथ लगल। मन माफित लूट मचौलक। इज्जत-आबरू बेठेकान भऽ गेल। संग-संग काछु-माछक ओझरी सेहो लगल। जइसँ पानिक ओझरी बढ़ल। किछु घाटक सरकारीकरण भेल आ किछु रहिये गेल। माने ई जे एके गामक पानि बँटा गेल। किछु दसनामा भेल किछु खुदनामा। खुदनामा ई जे पोखैर खुनैमे जे खर्च देलिऐ...। खाएर! जे भेल। फेर दोसर मोड़ लेलक, मोड़ ई लेलक जे गाम-गामक दसनामा पोखरिक सोसाइटी बनि गेल जे मछुआ सोसाइटी कहबैए। जे खास जातिक हाथ चलि गेल मुदा ओझरियो बढ़िते गेल। सोसाइटी भेने गामक पानिक हकदार अनगौंआँ भऽ गेल।

गामक पढ़ल-लिखल बेरोजगार दूधक संग दारूक कारोबार कऽ अपन बेरोजगारी भगबए चाहैए। गामक पानिक सदुपयोगक

कोनो बेवस्था नहि। पानिक की मोल जिनगीक लेल अछि ओ ढोलक-हरिमुनियाँक सुरे-तान धरि अछि। गाम-गामक चर-चाँचर आ मुइल धार सौंसे इलाका पसरल अछि मुदा उपजा लेल पानि नहि! यएह सोचि रमानन्द शारदानन्द, राम विलास, सिंहेश्वर आ जगरनाथ कार्यालयमे आवेदन देबए आएल। ओइमे एकेटा मांग छै– “गामक पानि किसान हाथ आ गामक रोजगार बेरोजगार हाथ।”



तिथि: 20 मई 2014, शब्द संख्या: 923

दनियाँ डाबा

जुड़शीतलक सात दिनक पछाइत पण्डिताइन काकी भोरे-भोर जोर-जोरसँ बाजए लगली। बजैक कारण छेलैन पैछला समुद्री लहैरक झटकमे मालो घर आ एकटा आश्रर्मियोँ खसि पड़लैन। छोट परिवार, बेटा-पुतोहु दिल्लीएमे घर बना रहै छैन, अनठा देलकैन। मालक घरेटा, माल-जाल नहि, पोसबो के करतैन, आब कि ओ जमाना रहल, आब तँ सभ अपन-अपन जातिक पुरहिताइ करिते अछि। एहेन लहकी छोड़ि अनेरे गाइक गोबरसँ हाथ महकाएब! आब कि ओ सतयुग रहल जे सत्यक युग रहितो भुत-प्रेत आ अप्सरा-परीक नाच हएत।

पण्डित काकाकेँ से सुतरलैन, सात गामक बीच दुइए गोरेकेँ टो-टा कऽ संस्कृत पढ़ल अबैत तँए दुनूक बहाली गामक पुरहिताइमे भऽ गेलैन। मुदा खेलो बढ़बे कएल। खेल ई बढ़ल जे सात गाममे सत्तैरटा बिआह हएत, बिआह करौनिहार दू गोरे भेला। सत्तयुगिया मनुक्ख बनैक लूरि नहि। लूरि ई नै जे जहिना घोड़ो अपना पाँखिये उड़ै छल तहिना मनुक्खो उड़ै छल। खाएर! जे भेल आकि होइए से सभ जानए।

गाम-गाममे परदेशियाक बाढ़ि, तँए सभ सालसँ बेसी जुड़शीतलमे डाबा दान भेल। रंग-रंगक, केते गोरे शहरेसँ अनने। लिखल-पढ़ल, रंगल-ढौरल। एकेटा घर पण्डित काकाकेँ, अँगनामे दनियाँ डाबाकेँ केना कुम्हारक आवा जकाँ लगौता। तँए सभटा घरेमे

तरे-ऊपरे ढेरियाएल। पण्डिताइन काकीक चोरबत्ती रातिमे बड़बे ने केलैन, भकुआएल रहबे करैथ, माथमे ऊपरका डाबा ठेक गेलैन। जाबे काकी बुझती-बुझती ताबे ढेरीए ढनमना गेलैन। ई तँ गुण रहलैन जे खापड़िक ढेरी नै छल ने तँ चानि बिना टुटने नै रहितैन। ओना, डबोक चोटसँ चानि दगाइए गेलैन।

वएह भोरुका चानिक चोट पण्डिताइन काकीकेँ छेलैन तँए जोर-जोरसँ पण्डित काकापर बजै छेली। ..एक तोर पण्डिताइन काकीकेँ काका बाजए देलखिन। दालिक आकि भातक उघियाएल फेनकेँ फेकबे नीक, बजैत-बजैत काकीक जखन दम खड़ेलैन तखन थोड़े स्पीड कमलैन। धियान लगौने पण्डित काका काग-भुसुण्डीक जप करैत रहैथ। दम खड़खड़ेने धियान टुटलैन। छन्दक मात्रा गड़बड़ाइत देखि पुछलखिन– “अनेरे भोरसँ आफन तोड़ने छी, बाजू मुदा असथिरसँ बाजू! भगवान केकरो अधला ने सोचै छथिन आ ने अधला करै छथिन। जँ केतौ अधला देखब आकि सुनब तँ जा कऽ कहबैन।”

कक्काक मधु-कैटब बोल सुनि काकी दुनू हाथसँ छातीकेँ दाबि असथिर केलैन। छातीक धुक-धुकी जहाँ असथिर भेलैन आकि बजली–

“देखू, जजमानकेँ कहि दियौ जे जँ दान करैए तँ ओहन दान करह जे दानीकेँ दाताक फल भेटइ। मुदा ई जे माटिक डाबासँ चाइन तोड़ाएब..! एहेन दान नै लेब।”

काकीक अल्लुक चोखा जकाँ चोखाएल बात सुनि पण्डित काका बजला– “अहाँक कहब नीक अछि मुदा निर्णय तँ वएह तीनू– माने ब्रह्मा, विष्णु, महेश–ने करता। हुनका तक सबाल पठा दइ छिऐन।”

कक्काक मौध-अमृत पीब पण्डिताइन काकी काकार्कें पठबैक तैयारीमे जुटि गेली। आब हुनकर दोख थोड़े हेतैन, जेते जल्दी तैयार करि विदा करबैन तेते जल्दी ने घरसँ निकलता।



तिथि: 22 मई 2014, शब्द संख्या: 409

धरम काँट

बेर-बेर जिनगीमे केते बेर सोन भाय पैंच-पालटक संकल्प लेलैन मुदा नै पार लगलैन। पार पेबाक रस्ते ने भेटैन, जँ केतौ अपने भेटबो करैन तँ संगी भोथिया दैन। ओना, भोथियबैमे परिवारोक हाथ रहबे करैन। मुदा जिनगीक साठिम बर्खक अवस्थामे संकल्पकेँ मजगूतीसँ पकैड़ आगू डेग बढ़बैक विचार उठौलैन–

"समाजक बड़ पैघ काज पैंच-पालट छी। जँ से नै हएत तँ नव-नौतुक केना अपन परिचय दऽ लालकाकीक मुहेँ चाबस्सियो लेती आ सीखबो करती।"

मनक विचार सोन भायकेँ मना लेलकैन जे पैंच-पालटक रक्षा हेबा चाही। मुदा दुनियाँमे केकर के बात सुनलक जे हमर सुनत, सुनै तँ तखन लोक छै जखन केकरो सोर पाड़लापर टुटैत नीन अपन सोन सन सुनैए। मुदा सोन सन सुन्नर बनाएब तँ सोनारेसँ सम्भव अछि, सभ बुते हएत केना? मने-मन सोन भाय गर लगबए लगला जे पैंच-पालटक दू रूप अछि। दुनूक अथाह रूप छइ। रौदक छाँह जकाँ जेते नव शक्ल तेते नमहर छाँह। सेहो एक रंग कहाँ होइए। उगैत रौदमे पीठिया छाँह तेते नमहर भऽ जाइ छै जे थाहबे कठिन भऽ जाइए जे सचमुच साढ़े तीन हाथक मनुक्ख छी आकि कोनो मनुखदेवा। मुदा जेना-जेना रौद प्रखर होइए तेना-तेना आकारो समटाए लगै छै, समटाइत-समटाइत ओते समटा जाइए जे बारह बजे मध्य अबैत-अबैत रौद-छाँहक खेल खिल जाइए। मुदा फेर दिन

घटिते पीठिआइत ओहिना माया जकाँ छाँह तेना पसरए लगैए जे चिन्हारो अनचिन्हार जकाँ हुअ लगै छइ। यएह तँ छी जिनगीक खेल। खाएर! दुनियाँक खेल जे हौउ, अपन खेल खेलाएब...। लोकक उपयोगी वस्तुक उपजबैक विचार करैत सोन भाय डेग उठेलैथ। पाँच साए रुपैआ एक गोरेसँ पैंच लेलैन। अखन धरि सोन भाय अपना निर्णयपर ठाढ़ नै भेल छला, पहिल संकल्प छेलैन तँए मजगूतीसँ पकड़ए चाहलैन। आमदनीक योग नीक बुझि पड़लैन...। मन मानि गेलैन जे आब ऐ संकल्पकेँ माने पैंच-पालटकेँ दू खण्ड कऽ मजगूतीसँ पकड़ब। दू खण्ड ई जे एक लेनिहार दोसर देनिहार। अपन पक्षक कियो मालिक होइए, अनकर पक्षक भाइयो केना सकैए, ई तँ ओकर जिनगीक योग छिऐ...। जेकरासँ पैंच नेने छला से तकेदा केलकैन। अढ़ाइ साए तत्काल दैत तेसर दिनक समय बनबैत कहलखिन– "परसू बँकयौता दऽ देबह।"

दोसर दिन एक गोरेक बेटी बिआह। 'यज्ञक दौड़' एहने काजमे लोक उपकैर-उपकैर यज्ञक योगमे योगदान करैत योगक्रिया सम्पन्न करैए। सोनो भाय केलैन। तकेदा भरि वस्तुक सहयोग कऽ देलखिन। मुदा यज्ञक बीच तकेदा करब अनुचित। काजक दौड़। यज्ञ केनिहारकेँ काजक खाँच भऽ गेलै जइसँ समैपर काज नै चलि सकल। धरम काँटमे ओझराएल सोन भाय अपन संकल्पक आगू ठाढ़ भऽ बजला–

"धरम काँटमे पड़ि गेलौं, अहींक सूत्रसँ सूत्रात्मक हएब से जानी अहाँ।"



तिथि: 23 मई 2014, शब्द संख्या: 395

Notes